सुखवाड़ा

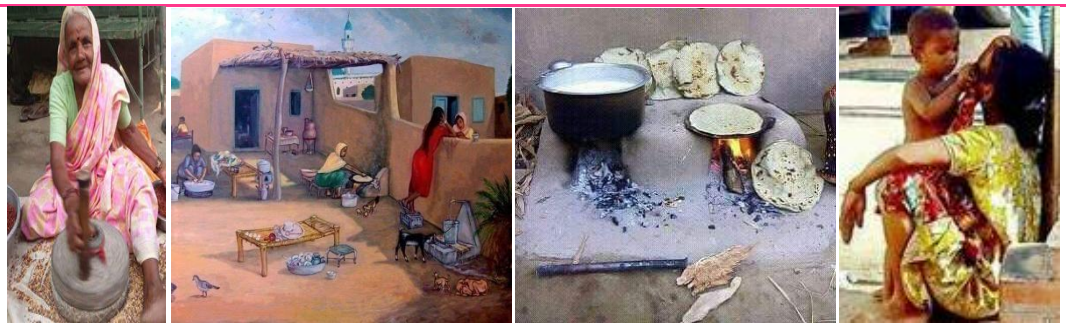

सतपुड़ा संस्कृति संस्थान,भोपाल का देश-विदेश में पढा जाने वाला ई मासिक

सम्पादन–लेखन–प्रकाशन–वल्लभ डोंगरे

"सुखवाड़ा" प्राप्त करने के लिए अपना अनुरोध भेजें–ई मेल-**vallabhdongre6@gmail.com**

सम्पर्क- HIG- 6, सुखसागर विला,फेज-1, भेल, भोपाल, पिन-462022,Mob.09425392656

मूल्य–"सुखवाड़ा" अमूल्य है,अतः निःशुल्क प्रदाय किया जाता है।

जनवरी–2018, "सामाजिक सरोकार" विशेषांक

विशेषांक के सम्पादक–संजय पठाड़े,कु.पुष्पलता पठाडे,राजेश बारंगे,हेमंत पवार,महेन्द्र डिगरसे,चंदन पवार

श्री संजय पठाड़े	कु.पुष्पलता पठाड़े	श्री राजेश बारंगे	श्री हेमंत पवार	श्री महेन्द्र डिगरसे	श्री चंदन पवार
स्वागत 2018	चहके भोर के पंछी जैसे खुशियॉ हरदम द्वार आपके,नए वर्ष में स्वर्णिम सपने हो जाए साकार आपके।				

सम्पादन सहयोग-संजय पठाड़े,सुरेश देशमुख,भगवत बुआडे, संतोष पवार, हेमंत पवार,बलवंतराव कड़वेकर, नितिन डोंगरे,राजेश बारंगे,नारायण पवार, बलराम डहारे,राम पवार,डॉ विजय पराड़कर, डॉ मयंक पवार, अमोल धारपुरे, दिनेश डोंगरदिए, दिनेश डोंगरे,राजेश हिंगवे, गुलाबराव बुआड़े, बंडु पराड़कर, हेमंत खवसे, श्यामकांत पवार,अवधकिशोर पवार,,संजय पठाड़े, प्रवीण भादे, अमोल धारपुरे, रामदास घागरे, युवराज हिंगवे,संतोष कौशिक, डॉ उदय चौधरी,डॉ एन डी राऊत , गीता डोंगरे, विभांशु डोंगरे

भोज जयंती पर विशेष/2	हम मरने मारने को अभिशप्त/	पवारी कविताएं
रोटी खिलाने वाला रोटी खाने जाता है/4	राजा भोज की योग्यता वाला अध्यक्ष	मॉ का पत्र
प्रेरणा स्रोत/, पाठकों की प्रतिक्रिया/	व्यवहार के दोहरे मानदंड	विवाह

बहुजन हिताय-बहुजन सुखाय की भावना से 19 वर्षो से नियमित प्रकाशित और निःशुल्क वितरित किया जाने वाला भोयर पवार ई मासिक

22 जन 2018 राजा भोज जयंती पर विशेष -

वे दूसरों की सहायता करते तो लगता मानो लक्ष्मी ही धन की वर्षा कर रही हो ,जब वे लिखते तो लगता मानो सरस्वती ही उनकी कलम में उतर आई हों और जब वे युद्ध के मैदान में होते तो लगता मानो दुर्गा ही उनकी तलवार में उतर आई हों।

राजा भोज के चित्र को ध्यान से देखें। माँ वाग्देवी की आराधना में वे लीन हैं। उनके बगल में तलवार लटकी हुई है। कद काठी मजबूत है। शरीर बलिष्ठ है। उनका पूरा व्यक्तित्व ही शिक्षाप्रद है। माँ वाग्देवी की पूजा करना इस बात का प्रतीक है कि हमारी बहन बेटी बहू माँ वाग्देवी स्वरूपा हैं। उनके मान सम्मान की रक्षा करना ही उनकी सच्ची आराधना है। हमारे समाज में पिता बेटी के और भाई बहन के चरण स्पर्श करता है। हमारे घर में लक्ष्मी स्वरूपा लाई जाने वाली बहू के भी ससुर चरण स्पर्श करते हैं। माँ बहन बेटी बहू सरस्वती लक्ष्मी पार्वती स्वरूपा होती हैं। भोज का व्यक्तित्व हमें यही सीख देता है कि जीवन में नारी का सम्मान करने से ही व्यक्ति का व्यक्तित्व निखरता है। राजा भोज के हाथ में जो तलवार है वह कर्म का प्रतीक है।तलवार तत्परता और स्फूर्ति का प्रतीक मानी जाती है। कर्म करके ही जीवन को सार्थकता प्रदान की जा सकती है।17 बार सोमनाथ को लूटने वाला गजनवी जब बेशर्मी की सारे हदें पार कर जाता है तब राजा भोज को अपनी तलवार निकालना पड़ता है। बहन बेटियों की आबरू की रक्षा के लिए राजा भोज को तलवार उठानी पड़ती है। मुँह ताकना और हाथ पे हाथ धरे बैठना क्षत्रियों को शोभा नहीं देता। भोज यही सीख देते है कि जरुरत पड़ने पर प्राणों की बाजी लगाने के लिए भी तैयार रहना चाहिए।

राजा भोज कर्म प्रधान विश्व करि राखा के प्रबल समर्थक और सटीक उदाहरण थे। उन्होंने 55 वर्ष की आयु में 84 किताबें और 120 काव्य लिखकर तलवार के साथ कलम को भी साध रखा था। राजा होने के कारण उनपर लक्ष्मी की कृपा तो थी ही सरस्वती और दुर्गा की भी उनपर असीम कृपा थी। वे दूसरों की सहायता करते तो लगता मानो लक्ष्मी ही धन की वर्षा कर रही हो,जब वे लिखते तो लगता मानो सरस्वती ही उनकी कलम में उतर आई हों और जब वे युद्ध के मैदान में होते तो लगता मानो दुर्गा ही उनकी तलवार में उतर आई हों।

उनका स्वस्थ और सुन्दर शरीर यही सन्देश देता है कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन पाया जाता है। मन को मंदिर की संज्ञा दी गई है। स्वस्थ मन होने पर ही स्वस्थ निर्णय लिए जा सकते हैं। जीवन में उन्होंने प्रतिभाओं को सम्मान दिया और अपने दरबार में उनकोसदैव ही उच्च स्थान प्रदान किया। उनके दरबार में सदैव उच्च कोटि के विद्वानों की परिचर्चाएं आयोजित हुआ करती थीं। दक्षिण से 400 विद्वानों को अपने दरबार में स्थान देकर उन्होंने यही बताने की कोशिश की कि प्रतिभाओं के सम्मान और उनके सानिध्य में ही जीवन का सच्चा विकास संभव है। राजा भोज द्वारा 1000 वर्ष पूर्व विज्ञान, तकनीकी,यांत्रिकी, ज्योतिष आदि का इतना विकास कर लिया गया था कि आज काजीवन भी उनके जीवनकाल के समय से काफी पीछे का प्रतीत होता है। उनका विकसित जीवन हमें जीवन में नवीन ज्ञान तकनीकी को यथोचित स्थान देने की सीख देता है।समय के साथ चलने के लिए हमें लीक से हटकर अपने जीवन में आवश्यक सुधार लाने और अपनाने की सीख देता है। हमें चाहिए कि रूढ़िवादिता, अन्धविश्वास,कुरीति,मृत्युभोज,दहेज़,बलि प्रथा,चुट्टी आदि आदिम काल से चली आ रही कुरीतियों और परम्पराओं को त्यागकर नवीन को धारण कर अपने स्वस्थ सुखी और सुविकसित जीवन की नींव रखें। राजा भोज जयंती मनाना तभी सार्थक होगा जब हम आडम्बर से बचकर उनके आदर्शों को अपने जीवन में उतारने का हर संभव प्रयास करेंगें। केवल राजा भोज के चित्र पर माला और पुष्प चढ़ाकर,जय राजा भोज के नारे लगाकर ,फेसबुक पर जय राजा भोज लिखकर या एक दिन आयोजन में भीड़ का हिस्सा बनकर भोजजयंती मनाना महज औपचारिकता होगी।

-वल्लभ डोंगरे,सुखवाड़ा, सतपुड़ा संस्कृति संस्थान भोपाल।

कृतज्ञता ज्ञापन है अंतिम संस्कार–श्रृद्धांजलि में उपस्थिति

(मृत्युभोज–जिसमें रोटी खिलाने वाला भी रोटी खाने जाता है।)

बड़ी गजब की एकता देखी हमने जमाने में,
जिंदों को गिराने में और मुर्दों को उठाने में।

महाभारत युद्ध 18 दिनों तक चला। इस युद्ध में केवल 5 पांडव और 3 कौरव पक्ष के लोग जिंदा रहे बाकी सब मारे गये। मारे गए लोगों के लिए युद्ध विराम किया गया हो या उनकी स्मृति में मृत्यु भोज दिया गया हो ऐसा कोई उल्लेख महाभारत में नही मिलता। रामायण में राम–रावण युद्ध का उल्लेख आता है जो 11 दिनों तक चला, जिसमें भी रावण के परिजन और कई योद्धा मारे गए, पर किसी की स्मृति में युद्ध रोकने या मृत्यु भोज देने का उल्लेख नहीं आता है। राजा दशरथ की मृत्यु पर अयोध्या में मृत्युभोज देने का उल्लेख रामायण और रामचरितमानस दोनों ही ग्रथों में नहीं मिलता है। इसका तात्पर्य यह है कि मृत्युभोज देने की प्रथा बाद में प्रारंभ हुई जो वेदसम्मत या न्यायसंगत नहीं है। हमारे ग्रन्थों में भी मानव जीवन को एक युद्ध की तरह ही देखा जाता है। किसी के मरने पर शोक जताने का तो प्रावधान है पर दैनिक जीवन के कार्यों को रोकने या न करने का कहीं कोई उल्लेख नहीं है। रामायण में भगवान राम अपने पिता दशरथ के देहांत की खबर पाकर दुखी तो होते हैं, पिता की मृत्यु पर शोक तो व्यक्त करते हैं पर वे अयोध्या वापस नहीं जाते। महाभारत युद्ध में भी पांडव और कौरव दोनों पक्षों द्वारा अपने परिजनों के मरने पर दुख व्यक्त किया जाता है पर दूसरे दिन फिर दोनों पक्षों के लोग युद्ध के लिए निकल पड़ते हैं। यह इस बात का प्रमाण है कि मरने वालों के लिए रामायण और महाभारत दोनों काल में दसवॉ या तेरहवीं करने का कहीं कोई प्रावधान नहीं था। यदि ऐसा होता तो युद्ध विराम करने का उनमें उल्लेख मिलता। पर ऐसा कहीं उल्लेख न होने का मतलब है कि दसवॉ और तेरहवीं बाद के काल में प्रचलन में आए हैं। मृत्यु के बाद इन दोनों कार्यक्रमों पर भोज देने की प्रथा नितांत अमानवीय और समाज की असंवेदनशीलता का प्रतीक है।

व्यक्ति के पंच तत्व में विलीन होने पर जाने–अनजाने उसके द्वारा समाज व किसी व्यक्ति विशेष के प्रति किए गए कार्यों के लिए दिवगंत आत्मा के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का सामाजिक समारोह है श्रृद्धाजंलि कार्यक्रम। मरने पर व्यक्ति देव में शामिल हो जाता है, वह देवतुल्य हो जाता है। यही कारण है, राह में मिली शवयात्रा को हम रूककर एवं झुककर प्रणाम करते हैं। उस समय यह नहीं देखा जाता कि वह अमीर की शवयात्रा है या गरीब की। मरने पर सबको समान दृष्टि से और देवतुल्य देखा जाता है। मरने के साथ ही व्यक्ति से शत्रुता खत्म हो जाती है। जाने–अनजाने मृतक द्वारा की गई गलतियों के लिए उसे क्षमा करना ही उचित होता है ताकि दिवगंत आत्मा को शांति एवं मुक्ति प्राप्त हो सके। संसार के हर धर्मों में जाने–अनजाने लोगों की दिवगंत आत्मा की शांति एवं मुक्ति के लिए प्राथनाएं की जाती हैं। अपनी जीवन यात्रा के दौरान व्यक्ति अपने परिजनों,परिचितों और मानव समाज को सुख–दुख के अवसर पर यथायोग्य सहयोग करता है। सुख में वह समाज के साथ हॅसता हैं तो दुख में दुखी भी होता है। व्यक्ति द्वारा किए गए जाने–अनजाने उपकारों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना होता है उसकी अंतिम यात्रा में शामिल होना। हमें अपने जीते–जी अपने प्रति किए गए उपकारों के लिए कृतज्ञता ज्ञापित करना होता है। भगवान कृष्ण की उंगली कटने पर द्रौपदी द्वारा अपनी साड़ी का पल्लू फाड़कर उनकी उंगली पर पट्टी बॉधी गई थी। उस उपकार का बदला भगवान कृष्ण ने द्रौपदी के चीरहरण के समय साड़ी बढ़ाकर पूरा किया था। किसी के द्वारा हम पर किए गए उपकारों से हमें इसी जन्म में उऋण होना होता है ताकि हमारी आत्मा ऋणी न रहे और हमारे दिवगंत होने पर वह शांति से मुक्त हो सके।

प्राणियों में हाथी सबसे ज्यादा संवेदनशील प्राणी होता है। रास्ते में मिले कुत्ते, बिल्ली, चिड़िया आदि के शव को भी बिना ढॅके वह आगे नहीं बढ़ता। वह उनके प्रति संवेदना भी प्रकट करता है। किसी हाथी का शव मिलने पर वह उसे घास–फूस,पत्ती,टहनी आदि से ढॅकता है और एक–एक सप्ताह

वहीं रूककर अपनी गहरी सम्वेदना प्रकट करता है। अन्य जीव–जन्तुओं द्वारा भी अपने संगी–साथी या अपनी बिरादरी के प्राणी के प्राण त्यागने पर दुख व शोक व्यक्त करते देखा गया है। हम जब मृतक के अंतिम संस्कार में शामिल होने जाते हैं तो सगे–संबंधी धोती,साड़ी लेकर जाते हैं। वास्तव में, यह मृतक के प्रति आपके सच्चे प्रेम का प्रतीक है। पर यह प्रेम आप जीते–जी जता जाते तो उन कपड़ों की अहमियत थी। मरने पर कपड़ों का न्यौछावर निरर्थक है। आप कपड़े किसलिए खरीदते हैं, इसलिए न कि आप जिन के लिए खरीद रहे हैं वह उन्हें पहनें। फिर मृतक भला उन्हें कैसे पहनेगा ? आपके कपड़े तो जलेंगे या बर्बाद होंगे। आपने जिस परिश्रम से कमाया और पाई–पाई जोड़े मेहनत के पैसों से खरीदा कपड़ा बर्बाद न हो, संबंधित को लाभ मिले इसका भी तरीका है। आप अपने प्रेम को ऐसे भी प्रदर्शित कर सकते हैं। हमें अंधानुकरण से बचना चाहिए व शांत मन से सोचना चाहिए कि हम ऐसा क्या करें जिससे हमारा प्रेम भी प्रदर्शित हो जाए और हमारे द्वारा लाई गई सामग्री भी उपयोग में आ जाए। हमें चाहिए हम कपड़े का मोह छोड़कर समय और परिस्थिति का ध्यान रखते हुए कपड़ों के बदले उस कीमत की अंतिम संस्कार हेतु जरूरी सामग्री साथ ले जाएं, जैसे– घी , अगरबत्ती, नारियल,चंदन,कपूर,हवन सामग्री या ईंधन आदि। इससे मृतक का अंतिम संस्कार आपके सहयोग से गरिमामय हो सकेगा। यह सामग्री पर्यावरण को साफ–स्वच्छ रखने में भी मददगार साबित होती है। आपका यह कदम अप्रत्यक्ष रूप से पर्यावरण को दूषित होने से बचाने में ही मदद करेंगा।

श्री देवराव ढोले जी नागपुर द्वारा अपने पिताजी के 75 साल पूरे होने पर सिल्वर जुबली पर्व मनाया गया जिसमें सभी नाते रिश्तेदारों को आमंत्रित किया गया। सभी रिश्तेदार अपनी सुविधानुसार ढोले जी के पिताजी के लिए कपड़े, मिठाई, फल आदि लेकर गए। घर में सभी के लिए स्वादिष्ट पकवान बनाए गए थे। सभी ने हिलमिलकर खाए। इस अनूठे नवाचार से ढोलेजी के पिताजी और सभी रिश्तेदार अत्यधिक प्रसन्न हुए। ढोलेजी ने अपने पिताजी से कहा–यदि यह सब मैं आपकी तेरहवीं पर करता तो आप रिश्तेदार द्वारा लाए गए कपड़े,मिठाई,फल आदि का उपयोग नहीं कर पाते और घर में बने व्यंजन का आप स्वाद भी नहीं ले पाते। अब बताइये तेरहवीं से यह कार्यक्रम अधिक अच्छा लगा न। ढोलेजी ने अपने पिताजी से कहा–अब मैं आपकी तेरहवीं नहीं करूॅगा। तेरहवीं के पूर्व इस तरह का आयोजन करके आप एक कुरीति को तोड़कर समाज को नई दिशा ही प्रदान करेंगे।

प्रतिवर्ष समाज के लगभग 2000 सदस्य हमसे बिछुड़ते हैं और उनके शवों पर लगभग 40,000 धोती साड़ी चढ़ते हैं। औसत कीमत 250 रुपये भी मानी जाए तो एक करोड़ रुपये के कपड़े जलकर बर्बाद हो जाते हैं। इसी तरह एक मृत्युभोज (तेरहवीं) पर औसत व्यय 25,000 रुपये आता है। केवल मृत्युभोज (तेरहवीं) पर समाज में प्रतिवर्ष 5 करोड़ रुपया बर्बाद कर दिया जाता है। प्रतिवर्ष समाज का 6 करोड़ रुपया एक कुरीति पर बर्बाद हो जाता है। यदि समाज इसी रुपये को समाज हित में व्यय करे तो इससे समाज के 2000 बच्चे उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। इसी पैसों से 5000 बेरोजगार सदस्य अपना रोजगार प्रारम्भ कर सकते हैं। इन रुपयों से किसी महानगर में 6 एकड़ जमीन खरीदी जा सकती है। इन रुपयों से 125 परिवारों को उनका स्वयं का मकान बनाकर दिया जा सकता है। और इन रुपयों से एक लाख 20 हजार परिवारों को 500 रुपये प्रति परिवार के मान से कपड़े व खाद्य सामग्री के लिए सहयोग किया जा सकता है। इन रुपयों से 60,000 किसानों को 1000 रुपये के मान से खाद–बीज के लिए सहयोग किया जा सकता है। समाज हित में हमें इस कुरीति को त्यागने के लिए साहस दिखाने की जरूरत है। श्री नत्थूजी डोंगरे बानूर द्वारा अपनी माताश्री की स्मृति में प्रतिवर्ष 5000 रुपये की छात्रवृत्ति गॉव के हाईस्कूल और हायरसेकेण्ड्री में सबसे अधिक अंक से उत्तीर्ण एक–एक छात्र–छात्रा को देने की घोषणा कर एक अच्छी शुरुआत की गई है। श्रीसुरेश देशमुख,नागपुर प्रतिवर्ष प्रतिभाशाली छात्र–छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान करते हैं। यह छात्रवृत्ति उन परिजनों द्वारा उपलब्ध कराई जाती है जिन्होंने अपने माता–पिता की स्मृति में प्रारम्भ की है। श्री सुरेश देशमुख नागपुर द्वारा लोगों को इस कार्य के लिए प्रेरित किया गया जिससे आज समाज के कई प्रतिभावान छात्र–छात्राऍ इससे लाभावित हो रहे हैं। श्री बाबूराव ढोले पाथाखेड़ा द्वारा अपने पिताश्री के देहावसान पर वृक्षारोपण कर पर्यावरण के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त की थी।मानव समाज में ही अंतिम संस्कार में

शामिल होने पर मृत्युभोज करने हेतु आमंत्रित करने की प्रथा है। अन्य किसी जीव जगत् या जाति में ऐसा करते हुए नहीं पाया जाता। मानव भी जीव जगत के संवेदनशील प्राणियों से कृतज्ञता ज्ञापित करने के तरीके सीखकर मानवजाति का हित कर सकता है।

पंजाबी साहित्यकार खुशवंतसिंह की दादी गॉव से जब शहर में रहने आई तो उसके लिए समय काटना मुश्किल हो गया। वह दोपहर को छत पर जाकर बासी रोटी के टुकड़े बिखेर देतीं और पक्षियों के आगमन की राह देखा करती। कुछ दिनों में पक्षी धीरे–धीरे आकर्षित होने लगे। दादी का छत पर जाकर रोटी के टुकड़े बिखरने का सिलसिला चल पड़ा। अब उसे इसमें आनंद आने लगा। पक्षी भी निडर होकर उसके सिर,कंधे व हाथ पर बैठने लगे। दादी को यह अच्छा लगता। दादी और पक्षी आपस में इतने घुलमिल गए थे कि उन्हें एक–दूसरे के बगैर चैन नहीं मिलता था। अचानक एक दिन दादी की मृत्यु हो गई। पक्षियों को इस बात की भनक लग गई। जब दादी का शव ऑगन में सबके दर्शनार्थ रखा गया तो पक्षियों का झुण्ड आकर ऑगन में उतर गया और शव के चारों ओर बैठ गया। बहू को लगा शायद वे रोटी खाने आए हैं तो वह घर में गई और बासी रोटियों के टुकड़े करके ऑगन में बिखेर दिए। फिर भी सभी पक्षी शांति से बैठे रहे। किसी ने भी रोटी के टुकड़ों को चोंच नहीं लगाई। जब दादी का शव अंतिम संस्कार के लिए ले जाया जाने लगा तो वे सभी पक्षी चुपचाप उड़ गए और ऑगन में रोटी के टुकड़े बिखरे पड़े रह गए।

ऐसा ही एक दूसरी सच्ची घटना है। इंग्लैण्ड में एक व्यक्ति का अपने घर से 8 किलोमीटर दूर फार्म हाउस था जिसमें वह मधुमक्खी पालन का कार्य करता था। वह रोज अपने फार्म हाउस पर जाया करता था और दिन भर मधुमक्खियों के साथ रहा करता था। एक दिन उसकी अपने घर पर मृत्यु हो गई। मधुमक्खियों को इसका भान हो गया तो वे 8 किलोमीटर उड़कर अपने मालिक के घर पहुॅच गई और जिस कक्ष में उसका शव रखा गया था उस कक्ष की छत पर जा बैठी। अंतिम दर्शन के लिए आने–जाने वालों को भी किसी मधुमक्खी ने नुकसान नहीं पहुॅचाया। जब शव को अंतिम संस्कार के लिए ले जाया जाने लगा तो मुधुमक्खियॉ कुछ दूरी तक शव के साथ उड़ती हुई गई और फिर अचानक गायब हो गईं।

पक्षी और मधुमक्खियॉ बिना किसी अपेक्षा के अपने प्रति किए गए उपकारों के लिए अपनी कृतज्ञता व्यक्त करके वापस चले गए। वे बाद में दसवां या तेरहवीं में खाने उपस्थित नहीं हुए। पवारी संस्कृति में मृतक के परिजनों को 10 दिनों तक रोटी खिलाने की प्रथा आज भी गॉवों में प्रचलित है। विज्ञान भी इस बात से सहमत है कि दुखी मन से बनाया गया भोजन स्वास्थ्य के लिए हितकर नहीं होता। इस तरह की कहावत भी प्रचलित है–जैसा अन्न,वैसा मन।दुर्योधन का अन्न खाकर भीष्म,द्रोण और कर्ण भी धर्म–अधर्म में भेद नहीं कर पाए थे,अतः इस तरह के भोजन से बचा जाना चाहिए। रोटी खिलाने वाले ही जब रोटी खाने लगते हैं तो इसे न तो विज्ञानसम्मत कहा जा सकता है और न ही मानवीय। किसी नाबालिग और बेरोजगार के परिजन की मृत्यु पर उसके यहॉ रोटी खाना किसी अक्षम्य पाप से कम नहीं है। जो स्वयं अपने लिए रोटी की व्यवस्था करने योग्य न हो उसे अपने किसी परिजन की मृत्यु पर उधार लेकर दूसरों को खिलाने के लिए मजबूर करना घोर निंदनीय और अमानवीय कृत्य है। पवारी संस्कृति की विज्ञानसम्मत रोटी खिलाने की संस्कृति को पुनः शहरों में भी लागू करके हम अपनी पवारी संस्कृति को आगे बढ़ाने में मदद कर सकते हैं। यदि ऐसा न भी कर सके तो जिस तरह हम बाजार या तीर्थ यात्रा पर जाते समय अपने घर से भोजन करके और रास्ते के लिए भोजन का प्रबंध करके जाते हैं वैसा हम दसवां,तेरहवीं या श्रृद्धाजंलि कार्यक्रम में जाते समय करके किसी पर बोझ बनने से बच सकते हैं।यदि समाज का हर सदस्य अपना छोटा सा स्वार्थ त्यागने के लिए तैयार हो जाएं तो मृत्युभोज जैसी बड़ी कुप्रथा से समाज को मुक्त करने में ज्यादा वक्त नहीं लगेगा। क्या इसके लिए आप तैयार है ?

–वल्लभ डोंगरे,भोपाल,मोबा. 9425392656

हम अभिशप्त है बिछुड़ने–बिखरने को और मरने–मारने को

जब महाभारत युद्ध में गांधारी के सभी 100 पुत्र मारे गये तो गांधारी ने भगवान कृष्ण को यह अभिशाप दिया कि जैसे उसके सारे पुत्र मारे गये ऐसे ही यादव कुल आपस में लड़–झगड़ कर मर जायेगा। क्षत्रिय होने के नाते पवारों ने जाने–अनजाने जिन माताओं को पुत्रविहीन,जिन पत्नियों को पतिविहीन,जिन बहनों को भाईविहीन किया है उनकी संख्या कम नहीं है। वे दुखिया–अबला बदला तो नहीं ले पाईं पर पूरी क्षत्रिय कौम को गांधारी की तरह अभिशाप जरुर दे गई। यही कारण है क्षत्रिय कौम आज भी आपस में लड़–झगड़ रही है। अपनों के खून की प्यासी लग रही है।समाज,घर,परिवार,संगठन में कोई न कोई एक अदृश्य कसाई घर कर जाता है और वह अदृश्य रुप से कुछ न कुछ काट रहा होता है जिससे समाज,घर,परिवार,संगठन प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाते हैं। आज पढ़–लिखकर भी पवार गॅवार ही बने हुए हैं। परस्पर प्रेम और आदर की भावना नही के बराबर है। अपने को समाज का हितैषी साबित करने में प्रतिभावान को पद पर न आने देने में पूरी ऊर्जा और शक्ति झोंक देने में अपनी शान समझते हैं।विक्रमादित्य ने नवरत्नों की परम्परा डाली थी। राजा भोज प्रतिभा का सम्मान करते थे। अब न तो रत्नों की परख की जाती है न ही प्रतिभा का सम्मान। विभिन्न संगठनों के पदों पर बैठे पदाधिकारी राजा भोज कम गंगू तेली ज्यादा लगते है। गंगू तेली को चुनना और गंगू तेली के तलवे चाटना उन्हीं देवियों के अभिशाप स्वरुप संभव हो पा रहा है।

उन्हीं देवियों के अभिशाप स्वरुप संभव हो पा रहा है कि हम विक्रममादित्य वंशीय और भोजवंशीय राजा–महाराजाओं में आपस में होने वाले युद्ध की परम्परा को अब तक कायम रखे हुए हैं। बस युद्ध का मैदान बदल गया है। अब युद्ध घर,पड़ोस,पत्नी,सहपाठी और परिचित से किया जाने लगा है। क्षत्रियों का काम मरना–मारना है तो हम मर–मार रहे है। हम सबको शत्रु समझते हैं और उनको मारना अपना धर्म समझते हैं। हमारा जन्म ही मरने–मारने के लिए हुआ है। पहले राजे–रजवाड़े हुआ करते थे तो युद्ध हुआ करते थे। अब राजे–रजवाड़े नहीं रहे तो हम खेती करने लगे। फिर भी क्षत्रियता हमारे रग–रग में बसी हुई है। अब खेती करते हैं तो हल को भी हथियार की तरह उपयोग में लाते है। हम खेती करने में नहीं धूरे–बंधारे फोड़ने में अपनी क्षत्रियता दिखाते है। हम नागर खेत में चलाए न चलाए धूरे में चलाना कभी नहीं भूलते। खेत के सपने हमें आए न आए, पर धूरे के सपने हमें अनिवार्य रूप से आते हैं। और न भी आए तो हम जरूर उन्हें देखते हैं। अब तलवार नहीं रही तो हम नागर,पिराना और रस्सी को ही हथियार बनाने लगे।यदि वह भी नहीं रहे तो गोटे (पत्थर) को ही हथियार बनाने में देर नहीं लगाते। गोटमार तो हमारे अंदर बसा है,हमारी रग–रग में बसा हैं। पांढुर्णा में तो साल में एक बार होता है। हमारे खेतों में तो यह आए दिन होते ही रहता है।

इतने पर भी मन नहीं माने तो हम कोर्ट–कचहरी में जाकर अपने मरने और सामने वाले को मारने का प्रबंध कर बैठते है। मरना–मारना तो हमारा धर्म हैं ना, हम क्षत्रिय जो ठहरें। हम अपने हर काम में क्षत्रियता दिखाते है, क्षत्रिय जो ठहरे। हम विवाह भी करते हैं तो क्षत्रियता दिखाना नहीं भूलते और जीवन भर दो परिवार परस्पर शत्रु की तरह रहते हैं। दो परिवार ही नहीं अपितु पति–पत्नी भी जीवन भर आपस में शत्रुता कायम रखकर अपनी क्षत्रियता का पक्का परिचय देते हैं। पति–पत्नी आपस में शब्द को भी हथियार की तरह उपयोग में लाते हैं। आरती उतारु का, काहे सुनात नी का, राजा हरिश्चंद्र की औलाद आदि कुछ ऐसे ही उदाहरण है जो शब्दों को हथियार की तरह उपयोग में लाए जाते हैं। राजा भोज ने तो 84 ग्रन्थ ही लिखे। हम अपनी दूसरों के साथ शत्रुता पर ही 84 ग्रन्थ लिख सकते हैं। गाली तो हमारी रगों में खून की तरह बहती है। हम गाली देने में पीएचडी प्राप्त कर सकते हैं। जैसे गुस्सा नाक पर बैठा रहता है वैसे ही गाली हमारे गालों पर बैठी रहती है।

विवाह के शुभ अवसर पर लड़ाई के अवसर पैदा करके हम वहॉ भी अपनी क्षत्रियता दिखाना नहीं भूलते। बारात समय पर न लगाकर व रात–रात भर सड़क पर नाच–गाकर विवाह का मुहुर्त गवॉकर हम अपनी क्षत्रियता दिखाते हैं। विवाह में दुल्हे के कपड़ों को लेकर या दिए जा रहे दहेज को लेकर हम लड़ने के अवसर निकालकर अपने क्षत्रिय होने का प्रमाण दे देते हैं। हम अपनी क्षत्रियता भोजन करते वक्त भी दिखाना नहीं भूलते। भोजन को लेकर दो–चार गाली दिए बिना हमारी क्षत्रियता साकार नहीं हो पाती, अतः हम इसे जरूर साकार करते है। यदि कभी यह अवसर चुक जाए तो मेंढक,छिपकली आदि मारकर भोजन में छोड़कर हम अपनी क्षत्रियता का परिचय दे देते है। हम सबको अपना हथियार बना लेते हैं। भोजन भी हमारा हथियार बन जाता है। महाभारत तो कुरुक्षेत्र में हुआ था। यहॉ तो हर घर महाभारत है और हर घर कुरुक्षेत्र। क्षत्रिय जो ठहरे। कुछ नहीं तो हम परम्परा के नाम पर मर–मार रहे हैं। कभी मृत्युभोज तो कभी चुट्टी के नाम पर हम मर–मार रहे हैं। कभी मॅहगी शादी करके, कभी उधार लेकर मृत्यभोज देकर हम अपनी क्षत्रियता दिखाते हैं। हम क्षत्रिय होने का प्रमाण उधार लेकर भी दिखाना नहीं भूलते। और यही सब कुछ हमें क्षत्रिय बनाता है और हमारी क्षत्रियता का बिना मॉगे औरों को प्रमाण दे जाता है। आपने देखा होगा राजा भोज ने भी 84 क्षेत्रों में अपनी क्षत्रियता दिखाई थी। हम भी उसी के वंशज हैं और इतने ही विभिन्न क्षेत्रों में अपनी क्षत्रियता दिखाकर राजा भोज की गौरवशाली परम्परा को और अधिक समृद्ध करने के हरसंभव प्रयास कर रहे है।राजा भोज अपने अनुयायियों के इन प्रयासों से स्वर्ग में भले ही खुश न हो पर उन दुखिया–अबला देवियों का अभिशाप अभी तक अपना असर बरकरार रखे हुए प्रतीत होता है।–**वल्लभ डोंगरे ,भोपाल**

सामाजिक सरोकार–

राजा भोज की तरह योग्यता वाला अध्यक्ष चुनने की जरुरत

अध्यक्ष किसी स्थान,नगर, विकासखंड,तहसील, क्षेत्र, जिले, राज्य या अखिल भारतीय संगठन का मुखिया होता है। वह समाज और संगठन का प्रतिनिधि होता है। उसके आचरण–व्यवहार से समाज सदस्य शिक्षा ग्रहण करते हैं। उसके आचार–विचार और व्यवहार से समाज को दशा और दिशा मिलती है। उसके मुखमंडल पर समाज का तेज झलकता है। उसकी बात समाज के हित के लिए होती है । उसका चयन समाज हित के लिए किया जाता है और उसका कार्यकाल समाज हित के लिए समर्पित होता है। प्रेमचंद की कहानी "पंच परमेश्वर" की भांति उसका हर निर्णय अपने निजी स्वार्थ से परे समाज हित के लिए होता है। वास्तव में, वह संगठन का परमेश्वर होता है। स्थान,नगर, विकासखंड,तहसील, क्षेत्र, जिले, राज्य या अखिल भारतीय संगठन जिसका भी वह अध्यक्ष है उसके सम्यक विकास का उसका दायित्व होता है। और यदि वह अपने दायित्व के प्रति गंभीर है तो वह इससे कभी मुकर नहीं सकता।

अब हमें अपने समाज संगठन के अध्यक्षों के आचरण की ओर रुख करके यह देखने की जरुरत है कि क्या हमारे संगठन के अध्यक्ष उपर्युक्त अपेक्षाओं पर खरे उतर पा रहे हैं? यदि हॉ तो वह स्थान,नगर, विकासखंड,तहसील, क्षेत्र, जिला, राज्य या अखिल भारतीय संगठन भाग्यशाली है। और यदि नही तो इसे समाज का दुर्भाग्य ही कहा जायेगा और उस अध्यक्ष से अधिक समाज स्थान,नगर, विकासखंड,तहसील, क्षेत्र, जिले, राज्य या अखिल भारतीय संगठन के लोग दोषी कहलायेंगे जिन्होंने समाज विकास के लिए अपेक्षित अध्यक्ष का चुनाव न कर समाज का अहित ही अधिक किया है।

समाज के अधिकांश संगठन स्वयं को समाज का हितैषी दिखाने और बताने की मंशा पर अस्तित्व में आते है। ऐसे संगठन समान विचार धाराओं के लोगों का एक गिरोह मात्र होता है जिसमें वे मनचाहा आचरण करने के लिए स्वतंत्र होते हैं। इन तथाकथित संगठनों में एक ही व्यक्ति बिना किसी शर्म–हया के 20–20 साल तक अध्यक्ष बना रहता है और स्वेच्छा से कभी भी अध्यक्ष पद छोड़ना नहीं चाहता। दबाव बढ़ने पर वह अपने ही किसी पिछलग्गू को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर देता है। इस तरह लोकतांत्रिक व्यवस्था में भी राजशाही व्यवस्था को जीवित रखने का अनैतिक प्रयास किया जाता है जिससे समाज विकास हाशिए पर चला जाता है और व्यक्ति का अहम् अंहकार पल्लवित पुष्पित होते रहता है। आजादी के इतने सालों बाद भी समाज का मुख्य धारा से काफी पीछे रहने के पीछे ऐसे अध्यक्षों की दूषित मानसिकता मुख्यतः दोषी मानी जायेगी।

एक समय में समाज के तीन–तीन संगठनों के अध्यक्ष पद पर तीन–तीन साढू भाई विराजमान थे जो अपने कार्यकाल में एक–दूसरे को आमंत्रित कर सम्मानित किया करते थे। समाज में उन्हें अपने तीन के अलावा कोई दिखाई नहीं देता था। ऐसा करते हुए उन्हें कोई अपराध बोध भी महसूस नहीं होता था। मंच पर वे अपने नाते रिश्ते के लोगों को ही बिठाना सुनिश्चित किया करते थे और ऐसा एक–दो साल नहीं पूरे 20–25 साल तक होता रहा। और उनके इस कृत्य पर समाज के लोग तृतीय पुरुष की तरह तालियॉ भर बजाते रहे, उनके विरुद्ध बोलने का साहस नहीं दिखा पाए। जब कभी किसी के द्वारा साहस दिखाने का प्रयास किया गया तो बड़ी बेशर्मी से एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल दिया गया। ऐसे अध्यक्ष अपने कार्यक्रमों में उन्हें ही आमंत्रित करना पसंद करते हैं जो उनकी प्रशंसा करते हैं और उनकी झूठी चापलूसी करते है।

अधिकांश अध्यक्ष किसी इमाम की तरह फतवा जारी कर कार्यक्रमों में समाज साहित्य के स्टाल लगाने तक पर रोक लगाने को अपनी शूरवीरता समझते है। वे हरसंभव इस प्रयास में रहते हैं कि समाज साहित्य को किसी भी तरह समाज के बीच न जाने दिया जाये इससे उनकी समझदारी कम नादानी ही ज्यादा प्रदर्शित होती है। एक संगठन के अध्यक्ष द्वारा मृत्युभोज को हतोत्साहित करने संबंधी पर्चे वितरण पर तक रोक लगाने के उदाहरण सामने आए है। एक संगठन में पुस्तकों के लगे स्टाल को निर्ममतापूर्वक हटाने का कार्य तक बड़ी बेशर्मी से किया गया। एक संगठन द्वारा समाज साहित्य का स्टाल लगाने के भय से उसे फोन पर आने से रोक दिया गया। अभी हाल ही में एक ब्लाक संगठन द्वारा प्रतिभाशाली बच्चों के सम्मान की सूचना देने वाले जिला संगठन के पदाधिकारी को ही भरी सभा में रोक दिया गया और अपमानित किया गया। एक संगठन द्वारा धार्मिक साहित्य के वितरण पर तक रोक लगाने का मामला सामने आया है। इस तरह के कृत्यों से अध्यक्षों का अपमानजनक,और अशोभनीय आचरण ही परिलक्षित होता है। हम राजा भोज को अपना पूर्वज मानते हैं और स्वयं गंगू तेली–सा आचरण करके राजा भोज बनना चाहते हैं तो यह कैसे संभव हो सकेगा?

अभी कुछ ही समय पहले राष्ट्रीय पवार महासभा की बैठक का आयोजन हुआ था जिसमें अध्यक्ष द्वारा चर्चा का विषय "भोयर क्यों लिखा जाता है" रखा गया था जो कि समय और पैसा की बर्बादी का ज्वलंत उदाहरण है। समाज विकास और समाजहित सुनिश्चित करने के लिए राजा भोज की तरह योग्यता वाले अध्यक्ष को चुनने का दायित्व समाज सदस्यों का है। इसपर गंभीरता से अमल करके ही समाज के प्रति हम अपने दायित्वों का भलीभांति निर्वाह कर सकेंगे अन्यथा समाज विकास में गति ला पाना संभव नहीं हो सकेगा।

–वल्लभ डोंगरे,भोपाल

बेटे–बहू के नाम मॉ का पत्र

बेटे, हो सकता है मेरा शरीर अब ज्यादा दिनों तक साथ न दे पाए और मैं ज्यादा दिनों तक जीवित न रह पाऊं। लगता है, मेरे जीवन की अब उल्टी गिनती शुरू हो गई है। सच पूछो तो तुम्हारे पिताजी के जाने के बाद मेरे मन में जीने का उत्साह ही नहीं रह गया था। मैं जीना नहीं चाहती थी पर मृत्यु भी तो अपने हाथ में नहीं है न बेटे। तुम्हारे पिताजी के जाने के बाद मैं पल–पल टूटी हूँ ,पल पल घुटी हूँ। ऐसा लगता है जैसे मेरा कोई वजूद ही नहीं है। फिर भी इतने दिनों तक केवल तुम सबके प्यार के दो बोल मुझे जीने के लिए उकसाते रहे। मैं तुम सबसे विदा लेने के पूर्व तुम सबसे कुछ बातें कहना चाहती हूँ। तुम मेरी बात ध्यान से सुनना और हो सके तो इसपर अमल करने का प्रयास करना। तुम्हारे पिताजी भी इन बातों को लेकर काफी चिंतित रहा करते थे। पर वे कभी तुमसे कह नहीं पाए। कहना तो मैं भी नहीं चाहती पर लगता है बिना कहे मैं चैन से मर नहीं पाऊंगी। तुम्हारी मॉ जो हूँ।

बेटे, इसे मेरी उम्र की परिपक्वता कहे या मेरा अपना स्वभाव पर मैं जिंदगी भर सदा दूसरों के भले में ही अपना भला देखती रही। मैंने अपनी तरफ से सदा यही प्रयास किया कि जाने–अनजाने किसी की भी आत्मा को चोट न पहुँचे। किसी को भी मेरे कारण कोई कष्ट न हो और मैं औरों पर आश्रित न रहूँ। बस थोड़ी ज्यादा बूढ़ी हो जाने और हाथ–पैर अशक्त हो जाने के कारण अब कभी–कभी मुझे किसी के सहारे के लिए मुँह ताकना पड़ता है। कोशिश तो अभी भी यही करती हूँ कि किसी की सहायता की मुझे जरूरत न पड़े।

तुम्हारे पिताजी अब इस दुनिया में नहीं है। बेटा, विधवा होना स्त्री जीवन का सबसे बड़ा दुख होता है। घर में नाती का विवाह हो रहा था। उसके नेंग आदि में मेरा उपस्थित रहना भी मेरे बेटे को सुहाता नहीं था। मेरी ही तरह अन्य विधवाओं का विवाह कार्यक्रम में आना जाना तक सहन नहीं होता था। बेटे, जिस मॉ ने तुम्हें जन्म दिया, जिसकी गोद में नाती पले–बढ़े, वह मॉ कैसे अशुभ हो सकती है ? जिस दिन मेरी उपस्थिति में नाती और नतिया बहू अलग हुए उस दिन मैं अपने आप को संभाल नहीं पाई थी। ऐसा देखना मेरे लिए असह्य और असंभव था। चूल्हा बनाने वाली ज्यादा अच्छे से जानती है कि चूल्हा अलग होने का दर्द क्या होता है। फिर भी मुझे अपनी छाती पर पत्थर रखकर यह सब देखना पड़ा था। इस मनोदशा से उबरने के लिए मुझे महिनों लग गए तब जाकर मैं सामान्य हो पाई थी। सदमे के कारण मेरा स्वास्थ्य भी बिगड़ गया था। इस बूढ़े शरीर को बेटे और क्या–क्या तकलीफ झेलनी पड़ेगी ? क्या ऐसा नहीं हो सकता कि मेरे जिंदा रहने तक तुम सब एक रहो। तुम सब मेरे अपने ही तो हो फिर तुम्हारे अलग–अलग होने या एक दूसरे से बिछड़ने का मुझे भला गम क्यों न हो ? तुम सबको एक साथ देखकर और जुड़ा हुआ पाकर मेरी आत्मा को भी शांति मिलेगी और हो सकता है मैं शांति से मर पाऊं। पेड़ से जब एक पत्ता भी टूटता है तो पेड़ को दुख होता है बेटे, मैं तो फिर तुम्हारी मॉ हूँ , अपने वाले का अपने वाले से टूटना या अलग होना मैं कैसे देख सकती हूँ, कैसे सहन कर सकती हूँ ? अपने पिता की उपस्थिति में जैसे तुम सब एकजुट थे मेरे जीवनकाल में भी उसी तरह की एकता की तुम सबसे अपेक्षा है।

बेटे, मेरा कई बार इलाज कराया गया। मैं स्वस्थ भी हो गई। पर जिस बेटे–बहू ने मुझे ले गया उसने ही अपना कर्त्तव्य निभाया। मेरे सब बेटे बहू मेरे समक्ष खड़े रहते तो मुझे गर्व होता। पर मैं अभागन यह गर्व भी न कर पाई। ऐसे अवसर पर कम से कम मुझसे मिलने आते, मेरा हाल–चाल पूछते तो भी मुझे अच्छा लगता। मेरे इलाज के समय न सही, बाद में भी मुझसे मिलने आ सकते थे। इससे मुझे लगता मेरे बेटे–बहू नाती–पोते मेरे दुख में मेरे साथ खड़े हैं। बेटे, अपने वाले का साथ खड़ा रहना जीवन में बड़ा संबल देता है। आज तुम भले ही इसे न समझ पाओ पर जिस दिन तुम बीमार होंगे और तुम्हारे ही अपने वाले वहॉ नहीं होंगे तब तुम्हें पता चलेगा ऐसे समय में अपने वालों की उपस्थिति की कितनी चाह होती है और उनकी उपस्थिति से हमें कितना संबल मिलता है। भगवान करे तुम सदैव स्वस्थ रहे।

बेटे, जिस दिन तुम्हारे नए घर का उद्घाटन था उस दिन बेटे–बहू दोनों के रिश्तेदार उपस्थित थे। बेटे के रिश्तेदार झोला उठाकर चले गए पर बहू के रिश्तेदारों के झोले में बहू चुपचाप लुगड़ा–साड़ी रख रही थी। रिश्तेदार तो इसे नहीं देख पाए पर ऐसा करने से रिश्तेदारी ज्यादा दिनों तक जिंदा नहीं रह पाती। अपने समाज में एक कहावत है–"भाऊ का आया ते कोठा म, बाई का आया ते ओटा म" शायद ऐसे ही व्यवहार को ध्यान में रखकर यह कहावत अस्तित्व में आई हो। मेरे लिए लाई साड़ी मुझे न देकर और उसे अपने परिचित को बेचकर तुमने पैसे तो बचा लिए पर बेटे तुम रिश्ते नहीं बचा पाए। बेटे, मॉ लुगड़े की नहीं सम्मान की भूखी होती है। और तुम वह सम्मान भी अपनी मॉ को नहीं दे पाए बेटे। मैं भगवान से यही प्रार्थना करती हूँ कि ऐसा कुछ तुम्हारे बच्चे तुम्हारे साथ न करें। तुम्हारे

पिताजी जिसने अपने मान–सम्मान की परवाह किए बगैर तुम्हारी शादी जोड़ी उनके ही झोले से बहू ने धोती निकाल ली। तुम्हारे पिताजी ने इसके लिए तुम्हें माफ कर दिया पर उनके स्थान पर अन्य कोई बाप होता तो संभवतः वह माफ नहीं कर पाता। ऐसे संस्कार बहू अपनी बेटियों को न दें बेटे, इसका ध्यान रखना, नहीं तो बेटियों के ससुराल वाले अपने को कोसेंगे, इससे अपने खानदान का नाम तो बदनाम होगा ही इससे पितरों को भी दुख ही पहुँचेगा। तुम्हारे पिताजी का जब आपेरशन हुआ था तब वे बुरी तरह डर व टूट गए थे। उनकी अपने सभी बेटों से मिलने की खूब इच्छा हो रही थी। बड़े भैया मिलने पहुँचे तो उन्हें देखकर तुम्हारे पिताजी फूट फूट कर रोए थे। बड़े भैया भी खूब रोए थे। तुम्हें भी आकर पिताजी से मिल लेने हेतु एक बहू ने फोन पर सूचना दी थी। तुम मिलने पहुँचे भी पर पिताजी को स्वस्थ देखकर खुश होने के स्थान पर तुमने बहू को झूठी खबर देने का कहकर डाटा था। क्या बेटा केवल बाप के मरने की खबर सुनकर ही आता है ? क्या बाप को जीवित देखना बेटे के लिए सुखकर नहीं होता है ?

मैंने कई बार महसूस किया बहू कि मेरे पदार्पन से तुम खुश नहीं रहती थी। व्यक्ति के चेहरे से खुशी व दुख के भाव कभी छिपाए नहीं छिपते। आने वाले की खुशी में घर खुशी से झूम उठता है और जाने वाले के दुख में घर दुखी हो उठता है। यह संस्कार की बात भी होती है। इसीलिए घर में लाने के पूर्व बहू–बेटियों के संस्कार देखे जाते हैं। कहा भी गया है–मॉ के घर हो बेटी जब तक, गुण विद्या सीख ले तब तक। बेटी को मॉ बाप से संस्कार सीखने होते हैं। पर जिस घर में कोई संस्कार ही नहीं होते उस घर से भला कोई क्या सीख कर आयेगा ? मैं प्रयास भी करती तो मेरा प्रयास निरर्थक जाता। इसे मैं अपनी कमजोरी ही मानती हूँ। मैंने सदैव बहुओं को बहू न मानकर अपनी बेटी की तरह माना। तुम यदि मेरी बेटी नहीं बन पाई तो इसे भी मैं अपनी ही कमजोरी मानती हूँ। फिर भी मैं अपनी बहुओं के लिए एक प्रार्थना जरूर करूँगी कि तुम्हें अपनी बहुओं से वह सब मिले जिसकी तुम अपेक्षा करती हो।

घर में मेहमान हैं और एक बहू घर से सबके सामने दहेज का सामान ले जा रही है, गद्दा–रजाई ले जा रही है। मेहमानों की उपस्थिति में ऐसे कृत्य करना अपने हाथों अपनी बेइज्जती कराना होता है। मेहमान अपने साथ क्या अनुभव ले कर जायेंगे कि फॅला महाजन के घर की फलॉ–फलॉ बहू तो ऐसा कर रही थी। जिस घर में ऐसी बहू हो उस घर की बहन–बेटियों को मॉगने कौन आगे आएगा बेटे ? फिर ले जाने में उसकी सहायता करने वाले तो तुम ही थे। तुम आज इसे भले ही अपनी गलती न मानो पर जिस दिन तुम अपनी बेटियों के लिए अच्छा घर और वर खोजने जाओगे उस दिन तुम्हें पता चलेगा कि तुमने कितनी बड़ी गलती की थी। विवाह करते समय अच्छा घर और वर इसलिए देखा जाता है कि आगे का जीवन अच्छे से व्यतीत हो। कहते है, विवाह ऐसे पेड़ की तरह होता है जिसपर चढ़ने पर खाने को मीठे–मीठे फल मिलते हैं और उसके नीचे रहने पर शरीर को ठंडी–ठंडी छाया मिलती है। तुमने तो ऐसे पेड़ को चुना जिसपर न तो फल है, न ही जिसकी कोई अपनी छाया। तुमने यह गलती स्वयं की। तुम आज इसीलिए किसी से कुछ कह नहीं पा रहे हो। पर बेटे, मॉ से यह तुम्हारा दर्द ज्यादा दिन छिपा नहीं रह सकता। बस मुझे दुख इस बात का है कि तुम्हारी गलती की सजा तुम तो भुगत ही रहे हो पर तुम्हारी इस गलती की सजा जाने अनजाने घर के अन्य सदस्यों को भी भुगतना पड़ रहा है। बेटे, संभव हो तो कभी अपने घर वालों से इसके लिए क्षमा जरूर मॉग लेना।

बेटे, कुछ बातें ऐसी होती है जिसे मर्द को अपनी छाती में छिपाए रखना होता है। उसे कभी अपनी पत्नी से भी नहीं बॉटा जाता। पत्नी से बॉटे जाने पर उसका सुरक्षित रखे जाने का खतरा ही बना रहता है। संभवतः यह सावधानी तुम पूर्व में बरते होते तो आज तुम्हें यह दिन नहीं देखने पड़ते। आज तुम्हारी अपनी पत्नी उन्हीं सब बातों को लेकर तुम्हारे लिए एक के बाद एक बखेड़ा खड़ा करती जा रही है। जब तुम ही अपने वालों के सम्मान की रक्षा नहीं कर पाए तो तुम उससे किस मुँह से अपने वालों के सम्मान की रक्षा करने की अपेक्षा कर सकते हो ? बेटे, जो अपने खून पर विश्वास न करके दूसरे के खून पर विश्वास करता है उसे ये दिन देखना ही पड़ता है और एक न एक दिन दुखी होना ही पड़ता है। इतिहास इस बात का गवाह है। खैर, बेटे, बड़ा भाई बाप की तरह होता है। हो सके तो जीवन पर्यन्त उसका मान बनाए रखना। इससे घर भी बचेगा और उसको अपने बच्चों को उदाहरण देने और अपने घर को जोड़कर रखने में मदद भी मिलेगी। तुम ऐसा कर सके तो नाते रिश्ते के लोग फॅला–फॅला के बेटे–बहू कहकर हमारा भी नाम लेंगे, इससे हमारी आत्मा को शांति ही मिलेगी।

तुम्हारी अपनी मॉ

पाठकों को बधाई **–सुखवाड़ा प्रकाशन के 19 वर्ष सफलतापूर्वक पूरे होने पर पाठकों को बधाई। जनवरी 2018 अंक से सुखवाड़ा का 19 वें वर्ष में प्रवेश।**

पवारी पिता पर विशेष–

नानक,कबीर,रहीम पिता

घर के अडवार में हल है, बक्खर हैं, पिराना है,ज्वाड़ा है ,जुपना है,चाड़ा है,डौरा है,डुप्पा है,सीवड़ है,जोत है,खुड़ी है,सुगनूर है,तीहा है,ओरिन में बॅधी गाड़ी है,चक्का है,छड़पी–टट्टा है,आर की लकड़ी है,मुचका है,दोर है लाम्हन है,ढेरा है। मयाल पर कुल्हाड़ी है,दराती है,गैती–फावड़ा है,सब्बल है। टट्टे पर रखी मोट है,चक्का–परोता है। मांडन में कील पर टॅगी सालू है,कमीज है। ओरांगनी में टॅगी धोती है,धुस्सा है,अंगोछा है। नीचे की उसारी में उतरे चमड़े के जूते है, हाथ की लकड़ी है।यह सब पिताजी के अस्त्र है।

घर से खेत और खेत से घर अंधेरे में आते–जाते। रास्ते का एक–एक पत्थर,एक–एक गड्ढा जाना पहचाना। पिताजी खेत जाते तो उन्हें देख बैल गर्दन हिलाने लगते,फसल लहलहाने लगती,पेड़ शाखाएं हिलाकर हुमसने लगते, गिलहरी नाचने कूदने लगती,पक्षी चहचहाने लगते। घर आते तो गाय रम्भाने लगती, बकरी मिमियाने लगती। सबको चारा देते। सब खुशी–खुशी खाने लगते।

खेत का कण–कण पिताजी के पसीने से भीगा हुआ।कण कण जाना पहचाना हुआ। फिर भी धरती मॉ से कुछ लेने के पूर्व कृतज्ञता दर्शाते। नींबू तोड़ने के पूर्व पेड़ के तने के पास पैसे रखते। फसल आने पर होला भूनते तो पहले पूजा करते, फिर ग्रहण करते। फसल काटने के पहले पूजा करते, दावन–उड़ाती पर पूजा करते। खलिहान में रखी रास को कुड़ो नहीं लगाते। सूपे से अनाज भरते। एकादशी पर गन्ने को पहली बार कुल्हाड़ी लगती। पूजा के लिए गॉव भर गन्ने बॉटे जाते।

जब कभी गॉव में भंडारा होता,कढ़ाई होती तो पिताजी अपनी चाटली साथ लेकर जाते। प्रसाद स्वयं बनाते।लोग खाते तो तारीफ के पूल बॉधने लगते। वे अक्सर एक भजन गुनगुनाया करते। घर आ गए लक्ष्मण–राम पुरी में आनंद भयो। गॉव–गॉव घुम–घुमकर सामान बेचने वाले हों,खरीदार हों या वैद्य सभी के रात्रि विश्राम और भोजन की व्यवस्था पिताजी घर पर ही करते। अमीर–गरीब,हरिजन–आदिवासी, महिला–पुरुष, छोटे–बड़े सबको समान और सम्मान की दृष्टि से देखते। गॉव की बेटियॉ कहीं भी मिल जातीं उनसे उनके सुख–सुख जानते और उनके प्रति अपनी समानुभूति–सहानुभूति दर्शाते।

पिता को माटी से विशेष मोह होता। वे माटी पर महाकाव्य लिखते।मुॅह अंधेरे ही बैलों को लेकर चल पड़ते। बैलों को लाड़–दुलार करते,पीठ थपथपाते। खुशी से बैल पूॅछ उठाकर दौड़ते–भागते। सूर्योदय के पूर्व हराई दो हराई खेत नागर–बखर डालते। पिता खेत में पसीने से स्नान करते। सूरज उनके श्रम पर मुस्कराता, अपनी किरणों से उनपर स्नेह बरसाता।

माटी उलटती–पलटती।नींदा गहरी नींद में सो जाता। धरा को हरा खाद मिलता। माटी उर्वर हो उठती। नागर–बखर से खुदती–छिलती मिट्टी बोनी के लिए तैयार होती। पिता सृजन की नई इबारत लिखते। खेत–खेत फसल की नई पंक्तियॉ अंकुरातीं–उभरतीं। खेत में अनाज के अनुष्ठान होते। पिता की ऑखें चमक उठतीं। रात में रखवाली के लिए मंढा (मंडप) उठ आता। पिता उसपर बैठकर अपनी दुनिया पर गौर फरमाते। पक्षी खेत में कलरव करतें, भर–भर पेट खाते पर पिता कभी गोफन नहीं चलाते।फसल पकते ही खेत दुल्हन की तरह दमकने लगते। फसल पिता के जेवर हो जातीं। फसल को हसिया लगाने के पूर्व पिता पूजा करते,नारियल फोड़ते, प्रसाद वितरित करते। दावन के लिए खलिहान बनाते। बैलों के खूरों से टापरी करते। मिट्टी दबकर कड़ी पत्थर हो जाती। उसे गोबर से लिपते तब दावन करते। खलिहान में मोतियों की तरह दाने झरते। पिता उड़ानी करते, खलिहान में रास का ढेर लग जाता।बैलगाड़ी में अनाज भरा जाता। घर की कोठियॉ अनाज से भर उठतीं। अब हर बाजार पिता का उत्सव होता।

उनके देने का अंदाज निराला होता। किसी से लेना उनकी प्रकृति में नहीं होता। उनका हर काम लोकसेवा से शुरु होता। वे सबके दोस्त होते, सब उनके दोस्त होते। समाज,गॉव,रिश्तेदार का काम उनका अपना काम होता।जात–पांत से उनका कोई सरोकार नहीं होता। सभी को हरसंभव सहयोग करने के लिए सदैव तैयार रहते। उनकी दुख की परिभाषा भिन्न होती। हमारे बहुत से दुख उनकी नजरों में दुख नहीं होतें। उनके दुख में ऑसू की जगह दर्शन टपकने लगता। उनके चेहरे पर सदा संतोष झलकता। नानक,कबीर,रहीम उनके व्यवहार में होते। उनका जीवन मानवीयता का महाकाव्य होता। उनका व्यक्तित्व राम, रहीम, कृष्ण बन जाता। ऐसे पिता को पूरी ऋद्धा और आस्था से सादर नमन्।

–वल्लभ डोंगरे,भोपाल

व्यवहार के दोहरे मानदंड

व्यक्ति जीवन में व्यवहार के दोहरे मानदंड अपनाता है। मेहमान आने पर नई साबुन,नया टॉवेल निकल आता है। बिस्तर पर नई चादर ,नया तकिया आ जाता है। पानदान में सुपारी, तम्बाकू के स्थान पर सौंफ,लौंग,इलाइची स्थान पा जाते हैं। चाय के पुराने कपों के स्थान पर चमचमाते नये कप बाहर आ जाते है। सब्जी और दाल में लगने वाले छौंक के तेल की मात्रा बढ़ जाती है। किसी तीज–त्योहार पर निकलने वाले अचार–पापड़ अचानक रसोई का हिस्सा बनकर मेहमान की थाली में उतर आते है। तुलसी चौरे पर रखा दीया ज्यादा तेज रौशनी देने लगता है। कुत्ते और बिल्ली पर कुछ ज्यादा ही रोटियॉ न्यौछावर होने लगती है। मोटर साईकिल का कई दिनों से सूखा पड़ा इंजिन का गला कुछ ज्यादा ही तर हो जाता है। घर के थाली, लोटे और गिलास कुछ ज्यादा ही चमकने लग जाते है। घर के बच्चों को दूध मिले न मिले मेहमानों की चाय में दूध कुछ ज्यादा ही डलने लगता है। चायपत्ती भी कुछ ज्यादा ही डलने लगती है, ताकि मेहमानों से झूठी ही सही पर प्रशंसा बटोरी जा सके।

आदमी बीड़ी,सिगरेट,दारु अपनों से छिपकर पीता है और ऐसे व्यवहार करता है जैसे कभी उन्हें छुआ तक न हो। मिलने आए किसी व्यक्ति से घर में रहकर माता–पिता अपने घर में न होने का झूठ बच्चों से बोलने का कहकर यह अपेक्षा करते हैं कि उनके बच्चे सच बोले। आदमी अपने पडोसी के पेड़–पौधों, पालतू जानवरों,फसलों को नुकसान पहुँचाकर अपने अच्छा होने का ढिंढोरा पीटते नहीं थकता। अपने घर का कचरा,कूड़ा–कर्कट अपने पडोसी के घर की ओर करने वाला आदमी स्वच्छ भारत पर भाषण देता है। दहेज में मोटी रकम वसूलने वाला दहेज न लेने की सीख देता है। अपने माता–पिता और पत्नी–बच्चों पर जुल्म ढाने वाला आदमी जज बन जाता है और न्याय करने की शपथ लेता है। अपने माता–पिता को भूखा रखने वाला आदमी अपने बच्चों से अपेक्षा करता है कि वे बुढ़ापे में उसका बराबर ध्यान रखें। बात–बात में दूसरों को गाली देने वाला आदमी अपेक्षा करता है कि उसके बच्चे संस्कारी होंगे। आदमी घर में कुछ और बाहर कुछ और व्यवहार करता है।

शहर में रह रहे बेटे–बहू के पास कुछ दिनों के लिए जब गॉव से माता–पिता रहने जाते हैं तो बेटे –बहू दिखाने के लिए सुबह 5 बजे उठकर घर का काम करने लग जाते हैं,घर ऑगन में झाड़ू लग जाता है, बहू स्नान करके ही रसोई में कदम रखती है और उनके जाते ही 8 बजे के पहले कभी सोकर नहीं उठा जाता। 12 बजे के पहले घर –ऑगन को कभी झाड़ू नहीं लग पाता, बिना स्नान के ही रसोई बन जाती है और पूरा घर मकड़ी के जालों से पट जाता है। दीवाली से दीवाली तक उनकी खूब धमा चौकड़ी मचती है। व्यवहार भी आदमी हाथी की तरह करने लगता है जिसके दॉत खाने के और दिखाने के और होते हैं। आदमी अपने घर बच्चे का जन्म दिन मनाता है और जूठे कप प्लेट पड़ोसी के घर–ऑगन की शोभा बढ़ाते हैं। आदमी टेंट लगाने के लिए रोड पर खूँटी ठोंकता है और रोड खराब होने पर सरकार को कोसता है। पुजारी मंदिर में पूजा करता है और ध्यान रासलीला में लगा रहता है। दान–दक्षिणक्ष देने वाले को जल्दी दर्शन लाभ कराता है और गरीबों को इंतजार करवाता है। बड़ों को मिठाई और गरीबों को तुलसी पत्र पानी भगवान के प्रसाद स्वरुप देता है। आदमी तन पर उजले कपड़े पहनता है और मन काला ही बना रहता है।

कबीर ने ऐसे व्यवहार पसंद आदमी के लिए एक सटीक दोहा लिखा है–

मन मैला तन उजला,बगुला कपटी अंग,
तासो तो कौआ भला,तन–मन एक ही रंग।

बेटी का दिल और प्यार जीवनभर अपने माता पिता के लिए रहता है

अपनी शादी के पहले दिन पति और पत्नी के बीच शर्त रखी जाती है कि किसी के लिए...भी दरवाजा नहीं खोला जायेगा ! उसी दिन उस लड़के के माता पिता आये और अन्दर जाने के लिए दरवाजा खट खटाया !पति पत्नी एक दुसरे की तरफ देखते है।पति अपने माता पिता के लिए दरवजा खोलना चाहता है लेकिन उसे शर्त याद आ जाती है। वह दरवाज़ा नहीं खोलता है ओर उसके माता पिता चले जाते है ।कुछ समय के बाद उसी दिन लड़की के माता पिता आते है और अन्दर जाने के लिए दरवाजा ख़त खटाते है ।

पति पत्नी फिर एक दुसरे की तरफ देखते है और उस समय भी वो शर्त याद करते है । पत्नी की आँखों में आंसू आ जाते हे वो अपने आंसू पूछते हुए कहती हे : मै अपने माता पिता के लिए ऐसा नहीं कर सकती और दरवाजा खोल देती है । पति कुछ नहीं कहता है । कुछ समय के बाद उनके दो पुत्र जन्म लेते है । इसके बाद उनको तीसरा बच्चा होता है जो एक लड़की (बेटी) होती है ।वह पति अपनी पुत्री के जन्म लेने के अवसर पर एक बहुत बड़ी और शानदार पार्टी का आयोजन करता है और अपने सभी दोस्तों और रिश्तेदारों को बुलाता है ।फिर उसकी पत्नी उससे पूछती है कि क्या कारण था जो उसने बेटी के जन्म पर इतनी बड़ी पार्टी का आयोजन किया जबकि इससे पहले दोनों दोनों भाइयो के जन्म पर ऐसा कुछ नहीं किया । पति अपने साधारण से शब्दों में बड़े प्यार से उत्तर देता है :क्योकि यही वो है जो एक दिन मेरे लिए दरवाजा खोलेगी ।"बेटिया बहुत स्पेशल होती है, आपकी छोटी सी बेटी भले ही आपके साथ कुछ समय के लिए ही रहे लेकिन उसका दिल और प्यार जीवनभर अपने माता पिता के लिए रहता है।"

हमारी छोटी–छोटी बचत दूसरों की नजरों में हमें छोटा बनाती है

माता–पिता की छोटी–छोटी बचत बच्चों के भविष्य के लिए बड़ी–बड़ी मुसीबत बन जाती हैं। कई बार यह आदत शिष्टाचार निभाने के मार्ग में भी रोड़ा साबित होती है। जानिए कैसे–

एक– 29 वर्षीया वधू के माता–पिता के अत्यधिक आग्रह पर वर उनका आग्रह टाल न सका। नियत तिथि पर वर ट्रेन से उनके शहर पहुँचा । वर ने स्टेशन से ऑटो किया और उनके घर जा पहुँचा। वधू दिखाई रस्म खत्म हुई और वर ऑटो लेकर स्टेशन जाने लगा तो वधू के पिता भी औपचारिकतावश उसी ऑटो से स्टेशन तक छोड़ने चले आए। ऑटो के रुकते ही वर ने किराया चुकाकर वधू के पिता से विदा ली। वर रास्ते भर सोचता रहा काश उस 29 वर्षीया वधू के माता–पिता को परमात्मा थोड़ी सी सद्‌बुद्धि दे देता और इस छोटी सी औपचारिकता को वधू का पिता खुशी–खुशी से निभा पाता तो संभव है उस लड़की का विवाह कब का हो चुका होता। कई बार माता–पिता की छोटी–छोटी बचत बच्चों के भविष्य को अंधकारमय बनाने का कारण बन जाती है।

दो– वधू के माता–पिता अपने परिचित के यहॉ विवाह में शामिल होने आए हुए थे। वे इस अवसर का लाभ उठाकर "एक पंथ, दो काज" करना चाह रहे थे। वे जिस परिचित के यहॉ आए हुए थे उन्हीं के मोबाइल से

वर पक्ष को फोन करके सौजन्य भेंट करने हेतु निर्धारित समय पर आने की सूचना दे गए। वे रास्ते में किसी दूसरे परिचित के यहॉ पहुँच गए और जब निर्धारित समय पर नहीं पहुँच पाएं तो फिर उस दूसरे परिचित के फोन से सूचना देने लगे कि हम अब इतने बजे पहुँच पायेंगे। वधू के माता–पिता की यह छोटी सी बचत उन्हें स्वाभिमानी न होना सिद्ध कर गई और जो विवाह तय न होने के पूर्व ऐसा कर सकते हैं वे विवाह तय होने के बाद क्या करेंगे इसका अनुमान लगा पाना किसी के लिए भी कठिन नहीं था।

तीन– चार–चार बेटियों के पिता को कई बार बेटियों के विवाह की जानकारी सांझा करने हेतु निवेदन किया गया पर हर बार यह कहकर मना कर देते कि उनने सन्यासी बनना स्वीकार कर लिया है। बाद में लोक लाज के चलते उन्होंने मन बनाया तब तक काफी विलम्ब हो चुका था। संयोग से एक बार उनकी बड़ी बेटी की उम्र के हिसाब से उपयुक्त संबंध की उन्हें जानकारी देने हेतु फोन किया गया । उनकी पत्नी ने कहा अभी घर पर नहीं है आने पर मैं सूचना दूँगी पर उनका फोन नहीं आया। माता–पिता इन छोटी–छोटी बातों में कि फोन करने में किता खर्च होगा किसी से सम्पर्क करना ही नहीं चाहते। हॉ, किसी का फोन आज जाए तो घंटों बातें करने को लालायित रहते हैं। इस तरह वे छोटी–छोटी बचत से अपना छोटापन ही उजागर करते रहे, और विवाह के प्रति अगंभीरता ही दर्शाते रहे। एक समय था जब अपने और अपने भाइयों के विवाह के लिए उनके द्वारा धरती पाताल एक कर दिया जाता था और सैकड़ों लडकियों को देखने के लिए गॉव–शहर छान मारा जाता था।

चार– एक सज्जन का विदेश में रह रहा बच्चा दीपावली पर भारत आया तो उसके विवाह हेतु मौसी द्वारा पहल की गई। मौसी द्वारा ही संबंधितों से चर्चा करके अपने घर पर ही लड़की दिखाई की रस्म पूरी कर ली गई। लडके के माता–पिता को बाद में संबंधितों को अपनी राय से अवगत कराना भी उचित प्रतीत नहीं हुआ। जब उनकी राय लेने हेतु उन्हें फोन किया गया तो दो दिन का समय मॉगकर भी उनके द्वारा फोन से जानकारी देना उचित नहीं समझा गया। इस तरह की छोटी–छोटी बचत हमें दूसरों की नजरों में कितना छोटा बना देती है इसका हमें ज्ञान ही नहीं होता।

पॉच– एक सज्जन द्वारा अपने बेटे के विवाह के लिए विवाह योग्य सदस्यों की जानकारी मॉगी गई। पहले तो उनके द्वारा मिस कॉल दिया जाता रहा। जब उन्हें कॉल बेक नहीं किया गया तो बुझे मन से उन्हें कॉल करना पड़ा जिसका दुख उनकी बातों से स्पष्ट झलक रहा था। उनके मेल पर उन्हें जानकारी उपलब्ध करा दी गई। पर उनके द्वारा जानकरी प्राप्त हो जाने की न तो सूचना दी गई न ही किसी तरह का धन्यवाद देने की जरुरत महसूस की गई। इस तरह वे छोटी–छोटी बचत से अपना छोटापन ही उजागर करते रहे।

छः– कई बार लोगों के अनुरोध पर उन्हें विवाह योग्य सदस्यों की जानकारी की लम्बी सूची प्रदान की जाती रही। पर संबंध तय हो जाने या विवाह सम्पन्न हो जाने पर सूची से नाम हटाने हेतु सूचना देकर वे लोगों को होने वाले अनावश्यक कष्ट से बचा सकते थे। पर उनके द्वारा अपना हित सध जाने पर दूसरों के हित का ध्यान रखना भी उचित नहीं समझा गया। इस तरह वे छोटी–छोटी बचत से अपना छोटापन ही उजागर करते रहे।

–सतपुड़ा संस्कृति संस्थान,भोपाल

जीवन को सार्थकता प्रदान करता भोज का जीवन

जीवन का महत्व केवल अपने और अपने परिवार के लिए ही जीने में नहीं है। समाज और पूरी दुनिया को परिवार समझकर "वसुधैव कुटुम्बकम" मानकर और उसके विकास में योगदान देकर जीवन को और अधिक व्यापक और उपयोगी बनाया जा सकता है। अपने लाभ,ज्ञान को जन कल्याण में लगाने में जीवन की सार्थकता है। इन्हें केवल अपने और अपने परिवार तक सीमित रखने से जीवन सीमित हो जाता है, सिमट जाता है, संकुचित हो जाता है।

जीवन में जो कुछ है वह आगे है। वह ऊंचाई है, स्वप्न है, उम्मीद है,नवीनता है, सृजन है। वह सतत् प्रवाह और गतिशीलता है। **जीवन पुराने को छोड़कर नए को स्वीकार करने और निरन्तर आगे बढ़ते जाने का नाम है। जीवन मुक्ति का नाम है। हर बोझ और हर बंधन से मुक्ति।**

जीवन वृक्ष–सा होना चाहिए। एक ऋतु आती है एक जाती है। वृक्ष सूखते हैं फिर हरे हो जाते हैं। वृक्ष कभी सूखे पत्तों और सूखे फूलों का मोह नहीं करता। जब तक वे हरे–भरे थे जब तक हृदय से लगाया,जब नही रहे तो बिना ऑसुओं के विदा कर दिया। **हमारा जीवन भी वृक्ष की तरह होता। पुराने को छोड़ता और नए का स्वागत करता। गुजरे हुए का न गम मनाता न ही कई–कई दिनों तक शोक में डूबा रहता। मन के बोझ को उतारकर उम्मीदों की नई राह पर कदम बढ़ाता।**

हर सुबह यह न मानें कि जीवन का एक दिन कम हो गया अपितु यह मानें कि ईश्वर ने कुछ अच्छा करने का आपको एक मौका और दिया है। जीवन में जीत हासिल करना ही सब कुछ नहीं। जीत की चाहत का भी अपना महत्व है। सब कुछ खो जाने के बाद भी भविष्य आपके हाथों में होता है।

जीवन किसी उद्देश्य के लिए है और उसे प्राप्त कर लेना जीवन को सार्थक बना लेना है। जीवन कुछ मूल्यों की रक्षा के लिए है। जीवन बचाने के लिए धर्म का त्याग करना पड़े तो ऐसा जीवन मृत्यु से भी बदतर है। मरने से लाभ नहीं।जिए और इतना जिए कि मृत्यु को भी जीने का मन हो उठे।

जीवन का अंतिम उद्देश्य उस ईश्वर की प्राप्ति है जो सम्पूर्ण सृष्टि का संचालक है। जीवन के सत्य का भान होने पर मृत्यु के भय से मुक्ति मिल जाती है। **मौत जिंदगी का अंतिम पर्व है।**

जीवन में सबसे खतरनाक है उम्मीद का मर जाना। जीवन में यदि उम्मीद का संबल खत्म हो जाए या वह कमजोर पड़ जाए तो जीवन में आई चुनौतियों का डटकर सामना नहीं किया जा सकता। राम ने उम्मीद नहीं छोड़ी थी तभी वे रावण का सामना कर पाए थे। जीवन में सब कुछ खोकर भी आरंभ किया जा सकता है।

जीवन एक तरह से मरने की ही प्रक्रिया है। जीवन में अच्छे से अच्छे की आशा करो और बुरे से बुरे के लिए तैयार रहो। जीवन के दो भाग होते हैं–कितने तुम अपने हो, कितने तुम सबके। जीवन में पूर्णता दूसरे को पाकर,दूसरे में अपने को समाकर आती है।

जीवन एक तोहफे के समान है जिसके साथ मिलने वाले अवसर और जिम्मेदारियॉ हमें कुछ लौटाने के लिए प्रेरित करती है।

अपने अस्तित्व के अंश को खोकर दूसरे में मिलने और अपने स्थान को दूसरों के लिए देकर आगे बढ़ने से ही जीवन प्रवाह में निरन्तरता बनी रहती है। जो अपने को देता है वह गतिमान बना रहता है, जो दूसरों को अपने में विलीन करता है वह जीवन प्रवाह का निर्माण करता है।

अपने पास जो कुछ है वह सब संसार में खो देने से ही संसार की धारा प्रवाहित होती है और देकर ही हम दूसरों में सदैव जीवित रहते है। बीज अपने को मिटाकर ही विशाल वृक्ष बनता है। वृक्ष भी अपनी प्राण शक्ति बीजों में देकर जीवित बना रहता है। बचाकर हम मर जाते हैं। वृक्ष बीज को अपना अंश न दे तो बीज नहीं होंगे आर बीज नहीं बनेंगे तो वृक्ष बनने की प्रक्रिया पर विराम लग जाएगा।

यानि वृक्ष मर जाएगा।जीवन रहने तक रिश्तों का निर्वाह भावना व दायित्व से किया जाना चाहिए, मगर मृत्यु के बाद उनका मोह पाले रखना जीवन की प्रगति को अवरूद्ध करता है। **जीवन की सार्थकता देने में है। जब कोई व्यक्ति स्वेच्छा से किसी को अपना समय देता है तो एक तरह से वह अपना अंश ही देता है। अपने को देने का अर्थ है–दूसरों का यथाशक्ति उपकार करना।**

हम यहॉ ईश्वर का काम कर रहे हैं। हमें अपने जीवन का उपयोग उसकी अच्छाइयों की पूर्ति के लिए करना है। यदि हम ऐसा नहीं करते और अपना जीवन खर्चने की बजाय उसे बचाने का प्रयत्न करते हैं तो हम अपनी प्रवृत्ति के विपरीत आचरण बरते और अपने जीवन को नष्ट करते है। **जो कोई अपना जीवन बचाता है वह उसे व्यर्थ खोता है।**

जीवन एक धधकते चूल्हे की तरह होता है,बिना पारिवारिक नियंत्रण के अक्सर बच्चे उसमें अपने हाथ जला बैठते हैं।

ईश्वर ने व्यक्ति को किसी उद्देश्य के लिए पैदा किया है। जिंदगी में जो कुछ प्राप्त होता है उसी के कारण प्राप्त होता है। जीवन में अर्थ नहीं होता,अर्थ हमें डालना पड़ता है। अर्थ डालने पर ही वह अर्थपूर्ण होता है।

जीवन और मृत्यु दोनों कला है। ठीक से जीने पर ही ठीक से मृत्यु होती है। जीवन में मृत्यु का और मृत्यु में जीवन का फल लगता है।

जीवन साइकिल की सवारी की तरह है। संतुलन बनाए रखने के लिए आपको लगातार चलना ही पड़ेगा।कर्म करते चलना ही जीवन है। गति और प्रगति सुखी व सफल जीवन का प्राणतत्व है। निरन्तरता में जीवन का सौन्दर्य निहित है। गति जीवन है, जड़ता मृत्यु।

सार्वजनिक जीवन में आने पर निजी जीवन नहीं रह जाता। जीवन में कुछ भी व्यर्थ नहीं होता, प्रयास से, प्रबंधन से चीजों को उपयोगी–अनुपयोगी बनाया जा सकता है।

जीवन में अकर्मण्यता घर कर ले तो स्वाभाविक गुणों से भी हाथ धोना पड़ जाता है। जीवन का अस्तित्व निरन्तर गतिशीलता में ही निहित है। जैसे **जल की पवित्रता स्वच्छता ,स्वस्थता गतिशीलता में होती है। ठहराव गंदगी और दुर्गन्ध का प्रथम सोपान है।** जीवन में सुख–दुख जो भी मिले उन्हें ईश्वर का प्रसाद मानकर ग्रहण करने से हमारा अंत समय दिव्य आत्मिक शांति से ओतप्रोत रहता है।जीवन में उत्साह और उमंग का आगमन जीवन का उत्सव है, आनंद है।

जीवन का कोई भी काम बिना तप के पूरा नहीं होता। व्यक्ति का जीवन ही तप है। विवाह करके दाम्पत्य जीवन निभाना भी तप है। बच्चों का लालन–पालन करना भी तप है।

भोज का जीवन दर्शन अद्भूत और अनुकरणीय है। राम और कृष्ण के बाद भोज का जीवन सबसे ज्यादा प्रेरणादायी रहा है। किसी का अनुकरण हमें अपनी जड़ों से, अपने इतिहास से काट दें तो यह चिंताजनक है। हर समाज, हर मनुष्य का अपना एक इतिहास, अपनी एक परम्परा और विरासत होती है और उन जड़ों से कटकर कोई भी व्यक्ति शिखर तक नहीं पहुॅच सकता। भोज को 1000 साल बाद भी बड़ी विनम्रता से याद करने के पीछे हमारा उद्देश्य उन जड़ों से जुड़े रहना और जुड़े रहने हेतु समाज सदस्यों को प्रेरित करना ही है।

–सतपुड़ा संस्कृति संस्थान

पराक्रम और पुरूषार्थ का सबके लिए उपयोग ही धर्म

भीष्म ने पिता की खुशी के लिए आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत धारण करने की प्रतिज्ञा की और आजीवन राजसिंहासन और परिवार की रक्षा की। महाभारत युद्ध में भीष्म के सेनापतित्व के दौरान किसी भी कौरव का कोई पांडव बाल बॉका न कर सका। **भीष्म का पराक्रम और पुरुषार्थ परिवार तक सीमित होकर रह गया। भीष्म के ब्रह्मचर्य व्रत और पराक्रम एवं पुरुषार्थ से वृहत समाज का हित होता तो उनका यह कर्म भी धर्म बन गया होता, पर ऐसा नहीं हो सका।** भीष्म द्वारा जन्मजात अंधे धृतराष्ट्र का राजा बनने पर विरोध नहीं करने और द्रौपदी के चीरहरण के समय हस्तक्षेप नहीं करने से अधर्म रूकने के स्थान पर बढ़ते चला गया। भीष्म में पराक्रम और पुरूषार्थ था, वे चाहते तो रोक सकते थे। इस तरह परिवार हित में समाजहित की उपेक्षा होते चली गई। **भीष्म ने अपने पराक्रम एवं पुरुषार्थ के बल पर युद्धक्षेत्र में हथियार न उठाने की प्रतिज्ञा कर चुके भगवान कृष्ण को भी हथियार उठाने के लिए मजबूर कर दिया था। वे ऐसा पराक्रम समाजहित के लिए दिखाते तो वे अपने जीवन को और अधिक समाजोपयोगी बना सकते थे।** राजा भोज द्वारा दिखाया गया पराक्रम और पुरुषार्थ अपने व परिवार के लिए नहीं अपितु समाज हित के लिए किया गया, इसलिए उनके द्वारा किया गया कर्म भी धर्म बन गया। गजनवी को बाहर खदेड़ना, 500 विद्वानों को राजदरबार में स्थान देना और सम्मान प्रदान करना, उनकी हर अच्छी रचना के लिए पुरस्कृत करना, प्रजा वत्सल होना, उनकी तकलीफों में उनका साथ

देना, अति संवेदनशील होना,हर नागरिक से कुछ न कुछ सीखना, ऐतिहासिक निर्माण कार्य,ग्रन्थ लेखन आदि राजा भोज के कर्म धर्म की श्रेणी में ही आते हैं।

शेरशाह सूरी ने कवि जायसी की प्रशंसा सुन उनसे मिलने की इच्छा व्यक्त की। कवि जायसी जन्म से कुरुप थे तथा उनके कान भी बेहद छोटे थे। जायसी को देख शेरशाह सूरी हॅस पड़े। **शेरशाह सूरी को अपने पर हॅसता देख जायसी बोले–महाराज, आप मुझपर हॅस रहे हैं या उस मालिक पर जिसने मुझे बनाया।** जायसी की बात सुनकर शेरशाह सूरी को अपनी गलती का अहसास हुआ और अपराधबोध तथा आत्मग्लानि से उनका सिर जायसी के सम्मुख झुक गया।राजा भोज के दरबार में ऐसे कई विद्वानों का आगमन हुआ पर कभी उनका ऐसा अपमान हुआ हो ऐसे कोई प्रमाण नहीं मिलते, न ही किसी लोकोक्ति आदि में उल्लेख मिलता है। इतिहास से सीखकर हम बेहतर समाज की संरचना कर सकते हैं। अपने सदस्यों की प्रतिभा का सम्मान करके हम बेहतर समाज की नींव रख सकते है।

पक्षी जिस घोंसले को छोड़कर जाते हैं उसे वे नष्ट नहीं करते। राजा भोज द्वारा अपने अवसान के दिनों में भी अपने निर्माण कार्यों की सुरक्षा एवं संरक्षण पर ही बल दिया गया। कहते है, **कलम पकड़ने का अर्थ ही जंग लड़ना होता है।** राजा भोज द्वारा 84 ग्रन्थ लिखे गए जो किसी जंग लड़ने से कम नहीं था।राजा भोज द्वारा सामान्य नागरिक द्वारा किये गए अच्छे काम या की गई रचना की भी प्रशंसा की गई और उन्हें सदैव प्रेरित ही किया गया। प्रशंसा करना खूबसूरत चीज हैं। इससे दूसरे प्रेरित होकर और अच्छा करते हैं और आपका हिस्सा बनते जाते हैं।

राजा भोज यह भलीभांति जानते थे कि **दुनिया में हमारे द्वारा किए गए कार्यों पर ही हमारी कीर्ति निर्भर करती है।** अतः उन्होंने वे हर संभव कार्य किए जिनसे दुनिया का भला हो सकता है।किवदंती बन जाने के बाद आदमी अपनी कीर्ति का गुलाम हो जाता है और सफलता का चश्मा उसके मौलिक दृष्टिकोण को ढॅक देता है। पर राजा भोज को कभी अपनी कीर्ति पर गुमान करते हुए नहीं देखा गया। यही कारण है कि वे अपने जीवन में 84 ग्रन्थ दे पाएं।

ऐसा नहीं है कि राजा भोज ने कभी पराजय का स्वाद न चखा हो।पर **शौर्य से हार भी विजय से ज्यादा सम्मान दिलाती हैं।** कभी–कभी कायरों को भी विजय प्राप्त हो जाती है,पर पराक्रम और शौर्य के बल पर प्राप्त विजय ही कीर्ति का कारण बनती है। राजा भोज ने संयोग से नहीं अपितु अपने पराक्रम एवं पुरुषार्थ से विजय प्राप्त की थी। अपने अंत समय में राजा भोज षड़यंत्र का शिकार हुए। वे कुछ कर पाते उससे पहले ही दुश्मन अपने इरादों में कामयाब हो चुके थे। **जब तक सत्य घर से निकलता है, तब तक झूठ आधी दुनिया घूम चुका होता है।** राजा भोज के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। राजा भोज 1000 साल पहले भी समाजोपयोगी हर परिवर्तन का सम्मान करते थे,चूॅकि **आज भी परिवर्तन की एक छोटी सी मुस्कान से अंधी पारम्परिकता दहल उठती है जो गर्व की नही, अपितु शर्म की बात है।**

–सतपुड़ा संस्कृति संस्थान ,भोपाल
मोबा–9425392656

सरोकार– विवाह : सबको अपने में और सबमें अपने को समोने की कला

विवाह पाने के लिए नहीं होने के लिए होता है। लता, लता न रहकर पेड़ बन जाए, व्यक्ति, व्यक्ति न रहकर किसी का प्रिय बन जाए, विवाह इसलिए है। विवाह जोड़ता है, अपने को तोड़ने की कीमत पर। **विवाह सबको अपने में और सबमें अपने को समोने की कला है।** विवाह प्रतीक है पूर्णता का–दूसरे को अपने में पाकर और अपने में दूसरे को पाकर। **विवाह के पूर्व राम द्वारा शिव धनुष तोड़ना अहंकार का तोड़ना है। शिव धनुष का गठन और क्रिया अंहकार का प्रतीक है। विवाह के पूर्व यदि व्यक्ति किसी का होना चाहता है या किसी को अपना बनाना चाहता है तो इसके लिए उसे अपने अंदर के अंहकार को विसर्जित करना पड़ता है।** भगवान श्रीराम ने यही किया और पहले शिव धनुष रूपी अंहकार तोड़ा फिर दाम्पत्य जीवन में प्रवेश किया। परिवार प्रदर्शन पर नहीं प्रेम पर टिकता है। पति–पत्नी बनने के पूर्व अंहकार का गलना जरूरी है तभी प्रेम पनपता है। विवाह के पूर्व राम द्वारा शिव धनुष तोड़ना इस बात का प्रमाण है।

पति–पत्नी के रिश्ते को समझने के लिए एक वृतांत का जानना जरूरी है। सीता की खोज करते राम–लक्ष्मण एक सरोवर के निकट पहुॅचे। पानी पीने के लिए भगवान राम ने कंधे से धनुष उतारकर रखा और बाण को जमीन में धंसा दिया। पानी पीकर जब भगवान राम ने अपना बाण निकाला तो नोंक पर खून लगा पाया। उन्होंने मिट्टी हटाकर देखा तो एक मेंढक लहुलहान पड़ा था। भगवान राम ने मेंढक से पूछा–तुमने मुझे आवाज क्यों नहीं दी ? यदि तुम दर्द से कराहते–पुकारते तो तुम्हें बाण निकालकर बचाया जा सकता था। मेंढ़क बोला–प्रभु, जीवन में जब भी मुझपर संकट आया तो आपको ही याद किया और हमेशा

आपने मेरी रक्षा की। भगवान राम ने दुखी होकर कहा–फिर इस बार तुमने मुझे क्यों नहीं पुकारा ? मेंढक बोला–इस बार मेरे राम, मेरे रक्षक स्वयं ही मुझे मार रहे थे तो आपके ऊपर कौनसी सत्ता है जिसे सहायता के लिए पुकारता ? मेंढक की बात सुनकर भगवान राम निरूत्तर हो गए। पति–पत्नी के जीवन में यह घटना बहुत अर्थ रखती है। पत्नी का राम तो पति ही होता है। पति ही यदि पत्नी को मारने लगे तो परिजन, कानून भले ही बचा लें पर वह जीते जी ही मर जाती है।

कन्या से कल्याणी बनने की महायात्रा का नाम है पत्नी। उसकी यह महायात्रा पिता और पति दोनों के लिए कल्याणकारी होती है। पति के सानिध्य में रहकर वह पार्वती, सर्व मंगला, शिवा हो जाती है। उसकी यह पुरूषार्थ यात्रा पति को पूर्णत्व,देवत्व व शिवत्व प्रदान करती है। पति के जीवन में पत्नी का पदार्पण मंगल माना जाता है। उसका आगमन मंगल्य होता है। इसीलिए विवाह को मंगल कार्य कहा जाता है, और पत्नी को मंगला। दोनों का एक दूसरे के जीवन में आना मंगलकारक हो इसीलिए विवाह में मंगलाष्टक का विधान किया गया है। और इस पूरे मंगलकार्य में मंगलकामना के रूप में मंगलाचरण और मंगलाचार मंगलसूचक होता है। **पत्नी प्रेम की प्रतिकृति होती है। वह पति की सहचरी बनकर उसे जीवन का आनंद प्रदान करती है। वह पति के मन में प्रेम का विश्वास होती है। वह पति की मंगलकामना के लिए व्रत, उपवास करती आस्था और श्रद्धा होती है। वह पति के जीवन को उद्देश्यपूर्ण बनाकर पति के जीवन को सार्थकता प्रदान करती है।** वह पति के जीवन में उम्मीद की किरण होती है। इसी उम्मीद के सहारे पति जीवन में आई चुनौतियों का सामना करने का संबल जुटा पाता है। भगवान राम द्वारा इसी उम्मीद के सहारे रावण का सामना करने का संबल जुटाया गया था। भगवान शिव द्वारा उसे अर्द्धांगिनी का दर्जा देकर पति के जीवन में पत्नी के महत्त्व को भलीभांति रेखांकित किया गया है। **करवा चौथ और हरतालिका तीज पर पत्नी द्वारा रखा गया व्रत–उपवास अपने पति के प्रति उसके अगाध प्रेम और समर्पण का प्रतीक होता है। पति की सलामती के लिए पत्नी ईश्वर द्वारा सृजित मंगलकामना होती है।**

पत्नी का पति के प्रति प्रेम आदि काल से स्तुत्य रहा है। भगवान शिव का जब अपनी ससुराल में अपमान हुआ तो मॉ पार्वती इसे सहन न कर सकी और उन्होंने हवन कुंड में कूदकर अपनी जान दे दी थी। सत्यवान के प्राण हरकर जब यमदूत ले गये तो सावित्री ने यमराज के पास जाकर उनके प्राण वापस ले आए थे। माता सीता के मन में अपने पति भगवान राम के प्रति अगाध प्रेम था। जीव जगत् में भी यह प्रेम स्पष्टतः परिलक्षित होता है। ऋग्वेद में ऋषि सावित्री सूर्या पति को ग्यारहवां पुत्र कहती हैं–दशास्यां पुत्रनाधेहि पति मेकादशम् कृधि ।10.85.45। तात्पर्य यह है कि पत्नी का प्रेम–दुलार संतान तक ही सीमित नहीं रह जाता। वह उससे आगे भी बढकर दूसरे संबंधों को भी सराबोर कर देता है। उसका वात्सल्य पति तक विस्तारित होता है तब वासना तिरोहित हो जाती है और पति पुत्र सा हो जाता है। इस तरह एक उम्र के बाद पत्नी का दर्जा भी मॉ का हो जाता है। **स्त्री सर्जक है, लक्ष्मी है, अन्नपूर्णा है, प्रेम की प्रतिकृति है जो उसे देवी का दर्जा दिलाता है।**

–वल्लभ डोंगरे

दाम्पत्य जीवन

दाम्पत्य जीवन को भारतीय लोक संस्कृति में एक चना दो दाल के रुप में परिभाषित किया गया है। दाम्पत्य जीवन परस्पर प्रेम पर निर्भर करता है। विवाह की आवश्यकता एकमात्र प्रेम है। इसपर भी यदि कोई पति–पत्नी एक–दूसरे पर अधिकार जताना चाहता है तो वह प्रेम नहीं अपितु सम्पत्ति पर अधिकार जताने जैसा हो जाता है जिसके लिए स्टैम्प लगाकर करारनामा होता है। दाम्पत्य जीवन में शंका या अन्य किसी नकारात्मकता के लिए कोई स्थान नहीं होता। जहॉ जाने–अनजाने इनके लिए स्थान या थोड़ी सी दरार भी छूट जाती है वहॉ दाम्पत्य जीवन युगल युद्ध में तब्दील होते देर नही लगती।

उल्लेखनीय है कि हमारी अधिकांश सामाजिक बीमारियॉ प्रेमविहीन विवाह के गर्भ से जन्मती हैं। विवाह को ढोते–ढोते लोगों की उम्र गुजर जाती है। मन में नफरत लिए हमबिस्तर लोग मानसिक रुप से रुग्ण संतान ही पैदा कर सकते हैं। मानसिक रुप से बीमार होने का यह एकमात्र कारण नहीं है परन्तु इसको अनदेखा नहीं किया जा सकता। प्रेम के दो संबल हैं–परस्पर विश्वास और सम्मान। इनकी कमी होने पर दाम्पत्य जीवन प्रायः गुरिल्ला युद्ध में बदल जाता है और पति–पत्नी अवसर पाते ही एक–दूसरे पर आक्रमण करके अपनी–अपनी कमजोरियों के टीलों के पीछे छिप जाते हैं। यह आक्रमण प्रायः मानसिक स्तर पर होता है और शनै–शनै मन से होते हुए शरीर द्वारा अभिव्यक्त होने लगता है।

इस तरह दाम्पत्य में प्रेम का स्थान हिंसा ले लेती है। इस युगल युद्ध में खून से ज्यादा ऑसू बहाये जाते हैं। दीवारहीन घरों का रोना सुनाई दे जाता है पर दीवार वाले बड़े घरों और महलों की दीवार को चीरकर रोना बाहर नहीं आ पाता। वहॉ रोना भी सार्वजनिक नहीं हो पाता। रोने का भी वहॉ कत्ल हो जाता है। सच्चा जीवनसाथी ऑसू बहाता नहीं, पोंछता है। ऑसू पोंछना प्रेम का प्रतीक है और ऑसू बहाना प्रताड़ना और पीड़ा का प्रतीक है। दाम्पत्य प्रेम के बिना दाम्पत्य नहीं रह जाता वह दमनकारी और दानवीय हो जाता है।

क्या आप क्षत्रिय है ?

क्षत्रिय किसे कहते है ,जानिए क्षत्रियों की श्रेणी और आप की स्थिति -

क्षत्रिय उसे कहते है जो साहसी हो ,सदैव बलिदान के लिए तैयार रहे ,जो त्याग के लिए हरदम तैयार रहे ,जो अपना जीवन समाज व देश की भलाई में समर्पित करने को तत्पर रहे,जो महिला बच्चों , गरीब और शक्तिहीन पर अत्याचार न करे,जो परंपरा पर न चलकर नई परम्पराएँ गढ़े. यदि आप इन प्रश्नों में से किसी भी एक प्रश्न का उत्तर हाँ में देते है तभी आपअपने को क्षत्रिय साबित कर सकने की स्थिति में होंगे। जितने ज्यादा हाँ उतने ज्यादा आप साहसी होंगे।

[आप किस तरह के साहसी है जानिए अपने द्वारा दिए गए उत्तरों से।

साहसी श्रेणी - 5 -10 हाँ -सर्वश्रेष्ठ साहसी ,3 -4 हाँ श्रेष्ठ साहसी ,1 -2 हाँ साहसी ,0 हाँ साहसहीन।]

1-क्या आपने कभी किसी के प्राणों की रक्षा की है ?

2 -क्या आपने बिना दहेज़ लिए विवाह किया है ?

3 -क्या आपने किसी विधवा से विवाह किया है ?

4 -क्या आपने किसी परित्यक्ता से विवाह किया है ?

5 -क्या आपने मृत्युभोज करना छोड़ दिया है ?

6 -क्या आप अपने बच्चों के विवाह में दहेज़ नहीं लेंगे ?

7 -क्या आप अपनी पत्नी का सम्मान करते है और उसे बराबरी का हक़ देते है ?

8-क्या आप बलि प्रथा के विरोधी है ?

9 -क्या आप समय आने पर अपने देश की रक्षा के लिए बलिदान देने को तैयार है ?

10 -क्या आप अंतर्जातीय विवाह किये है या करने वाले है ?

11 -क्या माता -पिता की हर बात का सोच समझकर ही समर्थन करते है ?

भले ही आपका उत्तर शून्य हो पर आपके क्षत्रिय होने पर मुझे कोई शंका नहीं है। आप क्षत्रिय है, बस आपकी स्थिति अभी उस शेर के बच्चे की तरह है जो भूल से भेड़ों के झुण्ड में शामिल हो गया था और अपने को भेड़ ही मान बैठा था। एक दिन शेर आ जाता है जिसकी दहाड़ सुनकर सभी भेड़े सहम जाती है और जान बचाने इधर उधर भागने लगती है। भेड़ के झुण्ड में रह रहा शेर का बच्चा भी भागने लगता है। शेर के बच्चे को भागते देख शेर को शंका हुई तो शेर उसे पकड़ कर नदी के पास लाया और उसे पानी में अपना चेहरा दिखलाते हुए कहा कि तुम भेड़ नहीं शेर हो और उसने पहली बार दहाड़ लगाई। उसकी दहाड़ सुन सारी भेड़े भाग गई। उसे विश्वास हो गया वह भेड़ नहीं शेर है। मेरा आपसे इतना अनुरोध है

कि अपने अंदर छिपे भेड़पन को भूलाकर शेरपन को स्थापित करे। और अपने व्यवहार से दिखा दीजिये कि आप क्षत्रिय हैं। आप साहसी है और हर गलत को सही करने का दम रखते है। निश्चित ही समाज और देश को आप पर गर्व होगा। -सतपुड़ा संस्कृति संस्थान भोपाल।

पति -पत्नी का मार्मिक एकालाप -

अंत में हम दोनों ही होंगे

भले ही हमारा भरा पूरा परिवार हो ,
बेटे पढ़लिखकर नौकरी करते हो
बेटियाँ ससुराल में सुखी हो
अंत में हम दोंनो ही होंगे।
माता पिता साथ छोड़ जायेंगे ,
बेटे दूसरे शहर विदेश चले जायेंगे ,
अंत में हम दोनों होंगे।
भले ही झगडे गुस्सा करे
एक दूसरे पर वार करें
अंत में हम दोनों ही होंगे।
जो कहना है वो कह ले
जो करना है वो कर ले
एक दूसरे के चश्मे और लकड़ी ढूढने में
अंत में हम दोनों ही होंगे।
मैं रूठ तो तुम मना लेना
तुम रूठो तो मैं मना लूँगा
एक दूसरे को लाड लड़ाने के लिए
अंत में हम दोनों ही होंगे।
आँखे जब धुँधली होगी
याददास्त जब कमजोर होगी
तब एक दूसरे को एक दूसरे में ढूढने के लिए
अंत में हम दोनों ही होंगे।
घुटने जब दुखने लगें
कमर भी झुकना बंद कर दे
तब एक दूसरे के पाँव के नाखून काटने के लिए
अंत में हम दोनों ही होंगे।
तुम्हें और क्या चाहिए
तुम क्या खाना चाहते हो
ऐसा पूछकर एक दूसरे को बहलाने के लिए
अंत में हम दोनों ही होंगे।
मेरा स्वास्थ्य ठीक हैं
तुम्हें ध्यान देने की ज्यादा जरुरत है
ऐसा एक दूसरे को ढाढस बंधाने के लिए
अंत में हम दोनों ही होंगे।
साथ जब छूट जायेगा
विदाई की घडी आ जायेगी
तब एक दूसरे को माफ़ करने के लिए
अंत में हम दोनों ही होंगे।
इस घडी में न माता -पिता होंगे ,
न बेटे बहू नाती होंगे
अंत में भी हम अकेले ही होंगे।

पाठकों की प्रतिक्रिया

*आदरणीय डोंगरे जी**सादर जय रामजी की*
आपको यह पोस्ट प्रेषित करने पर अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है।
मैं सुखवाड़ा का नियमित पाठक हूँ आपके द्वारा तैयार की जाने वाली इस मासिक ई पत्रिका-के माध्यम से ज्ञान में वृद्धि होती है।वास्तव में सुखवाड़ा का अर्थ मुझे आज ही मालूम हुआ और बड़े ही हर्ष का विषय है कि ऐसे ही कुछ शब्दों के प्रयोग केवल पवारी भाषा में ही होता है।
आदरणीय डोंगरे जी इस अंक के पठन से आज मुझे ऐसे अनेकों शब्दों का अर्थ मालूम हुआ जो दादी प्रायः घर में उपयोग में लाती है और आज मैं अपने आप को बहुत गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ की मेरे घर में आज भी शुद्ध पवारी भाषा का उपयोग किया जाता है।

बनन चल्या तुम लाडा

बनन चल्या तुम लाडा भैया बनन चल्या तुम लाडा।
बीस बरस की उमर तुम्हारी चाबत फिरय पान सुपारी
नागर की मुट्ठी नी पकड़ी करयो नी बिक्रा भाड़ा
बनन चल्या तुम लाडा भैया बनन चल्या तुम लाडा।
सूट बूट अउर कोट पहरेव बांधी तुम्न एक टाई
डोरा म काजर डाल्यो ,बन्दर सी शकल बनाई
बाटा का जूता पहरया मौजा म बांध्यो नाड़ा।
बनन चल्या तुम लाडा भैया बनन चल्या तुम लाडा।
घर म नी अन्न को दाना ,फिर भी जीप कराई
उधारी म गहना ले गया वीडियो सूटिंग कराई
बड़ा बड़ा हैरत म पड़ गया रह ख थाड़ा थाड़ा।
बनन चल्या तुम लाडा भैया बनन चल्या तुम लाडा।
गाँव गाँव ढूंढी लाड़ी ,टीका म लाई एक साड़ी
पंगत भी निपटा दी तुम्न दे ख बेसन कढ़ी
शादी का दूसरा दिन सी लटकाहे तुम चीथड़ा
बनन चल्या तुम लाडा भैया बनन चल्या तुम लाडा।
बाल बढ़या है हिप्पी साई ,दाढ़ी बकरा सी बढ़ाई
पोरया पोरी सा तमाशा देखय तुम्ख शरम नी आई
मुंढा प पानी नी जरसो ,डोरा म है चिपड़ा
बनन चल्या तुम लाडा भैया बनन चल्या तुम लाडा।
ससरा जू कोट सिलाहे जिनगी भर ओख चलाहे
सिला सके नी एक कोट तुम कर ख एत्ति कमाई
करदोडा म चड्डी अटकाहे ,डाल सके नी नाडा
बनन चल्या तुम लाडा भैया बनन चल्या तुम लाडा।
नांगर का हक्ले तुमसी सम्भलत नी आय चाडा
दूसरा को तमाशा देखय ,तुमते रहख थाडा
लाड़ी आ जाहे घर म तुम्ख कुई नी सुदाडा
बनन चल्या तुम लाडा भैया बनन चल्या तुम लाडा।

रचित -वल्लभ डोंगरे भोपाल

बाकी सब ठीक ठाक है

छपरी की दीवार धस गई बाकी सब ठीक ठाक है
खेत म की झोपड़ी बठ गई बाकी सब ठीक ठाक है।
बांडा बईल मर गयो , अउर डूंडा ख बेच दियो
खेती म फजीता हो गयो बाकी सब ठीक ठाक है।
डुंगी म सेंगा बुई है, डोभरी म अवंदा मक्या है
इत पानी नी आवत आय बाकी सब ठीक ठाक है।
बड़ो भाई गाँव म घुमय ,छोटो खेत म नी जात
पोरया पोरी कहना नी सुनत, बाकी सब ठीक है।
बेटा बहू रोटी नी देत ,भूरी काकी कव्हत रहे
मरा जघ अक्खन रुवय ,बाकी सब ठीक ठाक है।
अच्छो कुई पोरया होये ते ,तुरजी साठी देख्जो
सारजी कुई संग भाग गई ,बाकी सब ठीक ठाक है।
बटनी क़ो ससरा आयो थो,दायजा म फ़टफ़टी माँगय
ओकी सासू भी अड़ गई ,बाकी सब ठीक ठाक है।
तोरो भाऊ रात भर खासय,कभी कभी उल्टी सास चलय
मरी कम्मर अक्खन सिलकय ,बाकी सब ठीक ठाक है।
तोरो काकू रोज धुरा सरकावय,बाट सी आवन जान नी देत
एक दिन अक्खन लड़ाई भई ,बाकी सब ठीक ठाक है।
पोरया हन सब स्कुल जाय,मास्टर न कल भगा दिया
उनकी फीस नी भरी आय ,बाकी सब ठीक ठाक है।
पोरा का दिन लाठी चल गई ,नान्हा को माथा फूट गयो
किसना जेल म बंद है ,बाकी सब ठीक ठाक है।
कारी की छोड़ चिट्ठी हो गई ,साल भर नी भया बिहा ख
रांड अक्खन रूवय दिन भर ,बाकी सब ठीक ठाक है।
पोहर सी पाव्हना आया था ,तोरा बिहा साठी
पोरी पढ़ी लिखी है, बाकी सब ठीक ठाक है।

रचित -वल्लभ डोंगरे भोपाल

दो युवाओं का करिश्मा - सोचा और कर दिखाया - विवाह योग्य सदस्यों के लिए ऑनलाइन पोर्टल - समाज के दो युवाओं द्वारा विवाह के समय होने वाली दिक्कतों के मद्देनजर और समाज को इस दिक्कत से बचाने के लिए सभी विवाह योग्य युवक युवतियों की जानकारी संग्रह करने के लिए www.pawarmatrimonial.com ऑनलाइन पोर्टल)website) का निर्माण किया गया है इस! प्रक्रिया में जो जानकारी अब तक बुक या पेपर पर संग्रह की जाती थी, उसमे विभिन्न प्रकार की समस्यायें थीं जैसे कि सभी ग्रामीण क्षेत्रों से जानकारी ठीक तरह से मिल नहीं पाना , किसी सदस्य की जानकारी में कोई त्रुटि का हो जाना , उसे ठीक करने में बहुत समय लगना , संपर्क कर रहे सदस्यों को सही जानकारी नहीं मिल पाना या फोटो संलग्न नहीं है तो उसे संलग्न न कर पाना आदि ,इससे निजात पाने के लिए आन लाइन पोर्टल का विकास किया गया है ताकि इन समस्याओं का समाधान कहीं भी और कभी भी किया जा सकें। इससे ग्रामीण या शहरी हर क्षेत्र के सभी विवाह योग्य सदस्य अपने रजिस्ट्रेशन ऑनलाइन करा सकते!

कुछ और पवारी कविताएं–

माय तोन शादी कर दी गाँव म

एत्ति पढ़ा लिखा ख माय तोन शादी कर दी गाँव म
रोज सबेरे उठनू पड़य सबका आघ गाँव म।

जेठ जिठानी ताना मारय खूब रबावय काम म
साँझ सबेरे फुर्सत नी मख चूल्हा फुकू मु गाँव म।

सासू ससरा अनदेखी करय रब्ता देख मख काम म
जेठ जिठानी का आघ वी मुंढा नी खोलत गाँव म।

दुबली पतली काया मरी पेन पकड़्या मन हाथ म
दातरा कुदारी फावड़ा बिना काम नी चलत गाँव म।

गोबर पानी सराय पोताय सब मरा जुम्मा म
कलेवा म देर हो जाय ते सब भोबाय गाँव म।

कपडा लत्ता धोनो धानो लकड़ी फाटा गाँव म
साँझ सबेरे चौका बर्तन म फसी जिनगी गाँव म।

ई ते एत्ता भोरा है कि दिखात नी इनका डोरा म
जेठ जिठानी लोंदा तोड़य मू एख्ली रबू गाँव म।

मरी जिनगी ख़राब कर दी दे ख माय तोन गांव म
पढ़नो लिखनो अकारत गयो आ ख ऐना गाँव म।

आब नान्ही को बिहा करहे ते झांक ख नी देखनु गाँव म
शहर को गरीब ख देनु पर अमीर ख नी देनु गाँव म।
रचित -वल्लभ डोंगरे ,भोपाल

महज मनोरंजन - मरी बहू कहीं गुम गई है

मरी बहू कहीं गुम गई है
ओ भैया मिल्हे बता देजो।
थाना म ओकी रिपोट लिखाई
पच्चीस रुपया की हुलिया कराई
माता की मुँह प निशानी है
ओ भैया मिल्हे बता देजो।
मुंढा ओको कारो कोरस्या साईं
देखना म वा जसी गोंडिन बाई
एक टाँग सी लंगड़ी है
ओ भईया मिल्हे बता देजो।
कारो कव्हय बड़ी लडंका है वा
भूरो कव्हय कुई सीधी नहाय वा
एक कान सी बहरी है
ओ भैया मिल्हे बता देजो।
गोल मटोल वा गागड़ा साईं
मोटी तगड़ी मेंदरी साईं
देखना म पूरी बखारी है
ओ भैया मिल्हे बता देजो।
चाल हथिनी अक्कड मोरनी
हाव भाव सी पूरी शेरनी
एक डोरा सी कानी है
ओ भैया मिल्हे बता देजो।
बात बात म ताना मारय
बोलय ते जसी हाका मारय
एक हाथ सी लूली है
ओ भैया मिल्हे बता देजो।
रचित -वल्लभ डोंगरे ,भोपाल

और पापा ने छोड़ दी सिगरेट -अपने कमरे में सिगरेट पी रहे पापा को देखकर मुन्नी अचानक मायूस हो गई। उसे कल ही मैडम ने पढ़ाया था कि सिगरेट पीने से आदमी की जान चली जाती है ,आदमी मर जाता है। मैडम की पढाई हुई बातों से उसकी रूह काँप गई। मुन्नी अपने पापा के पास जाकर बोली-पापा ,क्या आप मर जाओगे ? और ऐसा कहकर वह जोर-जोर से रोने लगी। पापा बोले -आप ऐसा क्यों बोल रही हो ? मुन्नी बड़ी मासूमियत से बोली -मैडम बोल रही थी सिगरेट पीने वाले मर जाते है मैं यही सोच-सोच कर परेशान हूँ क्या आप भी मर जायेंगे पापा ?मैं किसे पापा कहूँगी ,मेरे साथ कौन खेलेगा ऐसा कहते हुए मुन्नी फिर रोने लगी। बेटी की बात सुनकर पापा बोले -लो बेटा, आज से सिगरेट पीना बंद। अब आपके पापा को कोई नहीं मार पायेगा। ऐसा कहते हुए पापा ने उसी समय सारी सिगरेट तोड़ कर फेंक दी। -सतपुड़ा संस्कृति संस्थान भोपाल ।